संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 338
पृष्ठ 8
रविवार
30 अगस्त 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- बेबाकी से बोलना कहीं रिश्तों...

विचार- जन-विरोधी है केंद्र की चीनी नीति...

खेल- जब दो साल एक भी सीरीज नहीं हारे...

माफिया के साथ मच्छर और बीमारी खत्म : योगी

गोरखपुर में कहा- 2017 से पहले दिमागी बुखार की दहशत थी, डबल इंजन सरकार ने खत्म किया

गोरखपुर (संवाददाता)। गोरखपुर में शनिवार को सीएम योगी ने अपनी विधायक निधि से शनिवार शाम 4 बजे कल्याण मंडप का लोकार्पण किया। कहा–यहां गरीब परिवार भी अपनी बेटियों की शादी करवा सकेगा। कहा– 2017 से पहले इसी सीजन में पूर्वी उत्तर प्रदेश में दिमागी बुखार की दहशत होती थी। लोग डरते थे कि कौन–सा बच्चा इसके कारण हमारे बीच से चला जाए। बच्चे के माता–पिता के लिए इससे बड़ा डर क्या हो सकता है।

1970 से यह बीमारी चल रही थी। इस दौरान कांग्रेस को 10 साल, सपा को 4 बार सरकार बनाने का मौका मिला। बसपा को 3 बार सरकार बनाने का अवसर मिला। लेकिन, इंसेफ्लाइटिस का निदान हो सके, इसके लिए इनके कानो में कभी जू नहीं रेंगी। मैं जब मुख्यमंत्री बना तो कहा कि

माफिया के साथ मच्छर और बीमारी खत्म होनी चाहिए। आज इंसेफ्लाइटिस से कोई मौत नहीं होती। माफिया खत्म हो चुके हैं। गोरखपुर में विकास हो रहा है। यहां फिल्मों की शूटिंग हो रही है। रविकिशन और संजय निषाद ने यहां मकान बनवाया है। दोनों यहां एक साथ फिल्मों की शूटिंग करेंगे। रक्षाबंधन पर बहनों के लिए रोडवेज की बसों में यात्रा मुफ्त की तो रवि किशन भी मुफ्त सुविधा चाह रहे हैं।

अब 60 साल से ऊपर की महिलाएं बस में फ्री सफर कर सकती हैं। रविकिशन की चुटकी लेते हुए योगी ने कहा कि रविकिशन सोच रहे होंगे कि उनकी उम्र भी 60 साल होती तो वह भी यात्रा कर लेते। उनसे कहना चाहूंगा कि यह महिलाओं के लिए है, पुरुषों के लिए नहीं। उन्होंने कहा कि 50 हजार बेटियों को हम अगले दो महीने में स्कूटी देने जा रहे हैं।

2017 के पहले बिजली नहीं, सड़क नहीं, इलाज की व्यवस्था नहीं, नौजवान के लिए नौकरी नहीं, बेटियों की पढ़ाई और शादी की व्यवस्था नहीं। अब तक उत्तर प्रदेश में 5 लाख बेटियों की शादी मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत हुआ है। हम वर्तमान में 1 लाख रुपए का अनुदान दे रहे हैं। 9. 5 लाख नौजवानों को सरकारी नौकरी दी है। 1 साल में 1 लाख नौजवानों के हाथ में नियुक्ति देंगे। चुनाव के पहले यह हो जाएगा। कोई कानून मानेगा तो कानून उसका भी सम्मान करेगा, कोई कानून की धज्जियां उड़ाएगा तो कानून उसकी भी धज्जियां उड़ाने में परहेज नहीं करेगा।

राजनाथ सिंह ने लखनऊ में फ्रेगरेंस पार्क का उद्घाटन किया, घंटाघर के सामने 2.3 एकड़ में फैला है पार्क, 50+ सुगंध वाले पौधे

बच्चों को मोबाइल से दूर करेगा पार्क

लखनऊ (संवाददाता)। लखनऊ में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने आज शनिवार को फ्रेगरेंस पार्क का उद्घाटन किया। घंटाघर के सामने 2.3 एकड़ में फैले इस पार्क में 50 से ज्यादा सुगंध वाले अलग–अलग किस्म के पौधे लगे हैं। उद्घाटन के बाद इस पार्क को आम लोगों के लिए 1 सितंबर से खोल दिया जाएगा। इस उद्घाटन के साथ ही 43. 13 करोड़ रुपए से वरुण विहार, नैमिषनगर जैसी परियोनाओं का शिलान्यास भी किया।

फ्रेगरेंस पार्क की बात करें तो इसे लखनऊ विकास प्राधिकरण ने लाजपतनगर क्षेत्र में विकसित किया है। पार्क में देसी के साथ विदेशी फूलों वाले पौधे भी लगाए गए हैं। एनबीआरआई के विशेषज्ञों ने पौधों के चयन और उनकी प्रकृति को ध्यान में रखते हुए इस

हिस्से को विकसित करने में सहयोग किया है।

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक, राज्यसभा सांसद डॉ. दिनेश शर्मा, यूपी सरकार में मंत्री दिनेश प्रताप सिंह, मेयर सुषमा खर्कवाल, के साथ फ्रेगरेंस पार्क में शाम 4:10 बजे पहुंचे। यहां उनकी अगुआई विधायक नीरज बोरा ने की। राजनाथ सिंह ने पार्क में चंदन का पौधा लगाया। इसके बाद मंच पर पहुंचे।

मंच पर रक्षामंत्री ने विभाजन विभीषिका झेल चुके कुछ वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान किया। इसके अलावा, पूर्व विधायक विद्या सागर गुप्ता, पूर्व मेयर संयुक्ता भाटिया को भी सम्मानित किया। मंच पर सिख समाज के लोगों ने राजनाथ सिंह को सम्मान में तलवार भेंट की, जिसे उन्होंने दोनों हाथों से उठाया।

मंत्री नागेंद्र के इस्तीफे के बाद भाजपा हमलावर, कांग्रेस से पूछा- गरीब दलित को न्याय नहीं चाहिए क्या?

नई दिल्ली (एजेंसी)। कर्नाटक विधानसभा में विपक्ष के नेता और वरिष्ठ भाजपा नेता आर. अशोक ने शनिवार को कांग्रेस के उन आरोपों का जवाब दिया, जिनमें कहा गया था कि भाजपा दलित नेता और योजना एवं सांख्यिकी विभाग के पूर्व मंत्री बी. नागेंद्र को निशाना बना रही है। उन्होंने सवाल किया कि क्या कथित अनियमितताओं के सिलसिले में आत्महत्या करने वाले दलित अधिकारी को न्याय नहीं मिलना चाहिए था। बंगलूरू में मीडिया से बात करते हुए अशोक ने कहा कि अधिकारी चंद्रशेखर का परिवार न्याय की मांग को लेकर सड़कों पर उतर आया है। उन्होंने सवाल किया कि कांग्रेस नेता नागेंद्र के साथ कथित अन्याय पर तो चिंता जता रहे हैं, लेकिन मृतक अधिकारी और उनके परिवार की हालत को नजरअंदाज कर रहे हैं। अशोक ने कहा, श्कांग्रेस के मुताबिक, दलित मंत्री नागेंद्र का इस्तीफा मंजूर नहीं किया जाना चाहिए, जबकि चंद्रशेखर जैसे दलित अधिकारी की आत्महत्या से मौत हो सकती है। चंद्रशेखर एक ईमानदार अधिकारी थे। गौरतलब है कि चंद्रशेखर की आत्महत्या के बाद एक सुसाइड नोट मिलने पर अनियमितताओं का मामला सामने आया था। अशोक ने आरोप लगाया कि चंद्रशेखर ने मरने से पहले जिन लोगों के नाम लिए थे, उनमें से कई दलित थे। उन्होंने सवाल किया कि क्या कांग्रेस न्याय को तभी अहमियत देती है जब आरोपी आर्थिक रूप से संपन्न हो। अशोक ने पूछा, श्कांग्रेस नेताओं के मुताबिक, मृतक दलित और उनके परिवार को न्याय की जरूरत नहीं है, लेकिन मंत्री नागेंद्र को न्याय चाहिए, जो आर्थिक रूप से संपन्न हैं। उन्हें शर्म आनी चाहिए। दलितों के लिए यह कैसा न्याय है। अगर कोई दलित गरीब है तो उसे न्याय नहीं मिलना चाहिए, लेकिन अगर वह अमीर है तो उसे न्याय मिलना चाहिए।

आतंक के मददगार नहीं बचेंगे : पूर्व सेना प्रमुख नरवणे

वडोदरा (एजेंसी)। पूर्व सेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान के प्रति भारत के सैन्य दृष्टिकोण में बड़ा बदलाव दिखाया। उनके मुताबिक, इस कार्रवाई में सिर्फ सीमा के पास मौजूद आतंकी ठिकानों को निशाना नहीं बनाया गया, बल्कि पाकिस्तान के भीतर गहराई में मौजूद उन लोगों और ठिकानों पर भी कार्रवाई की गई, जिन्हें आतंकवादियों का समर्थन करने वाला माना गया। जनरल नरवणे ने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर जरूरी कार्रवाई थी। उन्होंने बताया कि इससे पहले उरी और पुलवामा जैसे आतंकी हमलों के बाद भारत की सैन्य कार्रवाई मुख्य रूप से सीमा के नजदीक स्थित आतंकी ठिकानों तक सीमित रही थी। उनके अनुसार, इस बार कार्रवाई का दायरा अलग था। पाकिस्तान के अंदर मुरीदके और बहावलपुर जैसे स्थानों पर उन ठिकानों को निशाना बनाया गया, जहां से आतंकवाद को समर्थन मिलने की बात सामने आई थी। नरवणे ने कहा कि इस कार्रवाई से भारत ने यह संदेश दिया कि आतंकवाद को समर्थन देने वाले लोग कहीं भी हों, वे भारतीय कार्रवाई से बच नहीं सकते। पूर्व सेना प्रमुख ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के उस बयान का भी उल्लेख किया, जिसमें आतंकवादियों के खिलाफ उनके इलाके में जाकर कार्रवाई करने की बात कही गई थी। नरवणे के मुताबिक, ऑपरेशन सिंदूर भारत के सैन्य तौर–तरीकों में एक बहुत महत्वपूर्ण बदलाव था। उन्होंने कहा कि आतंकवाद को समर्थन देने वालों के लिए अब कोई सुरक्षित जगह नहीं होने का संदेश दिया गया। पाकिस्तान के सिर क्रीक क्षेत्र में बढ़ी गतिविधियों और कथित श्ऑपरेशन अबाबीलश को लेकर पूछे गए सवाल पर नरवणे ने कहा कि इस तरह की गतिविधियां होती रहती हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि सेवानिवृत्त होने के कारण उनके पास इस कथित अभियान की पूरी जानकारी नहीं है।

उज्बेकिस्तान और किर्गिज की यात्रा से मध्य एशिया में भारत की रणनीतिक साझेदारी मजबूत होंगी : मोदी

नयी दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि उज्बेकिस्तान तथा किर्गिज गणराज्य की उनकी यात्रा से मध्य एशिया में भारत की रणनीतिक साझेदारी मजबूत होंगी और शांति, स्थिरता तथा समृद्धि के साझा प्रयासों को बल मिलेगा।

श्री मोदी ने दोनों देशों की चार दिन की यात्रा पर रवाना होने से पहले शनिवार को एक वक्तव्य में कहा कि वह राष्ट्रपति शावकत मिर्जियोयेव के निमंत्रण पर 29 और 30 अगस्त को राजकीय यात्रा के लिए ताशकंद में रहेंगे। उन्होंने कहा कि वह राष्ट्रपति मिर्जियोयेव के साथ द्विपक्षीय महत्व के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा के लिए उत्सुक हैं।

उन्होंने कहा ,"हाल के वर्षों में भारत–उज्बेकिस्तान रणनीतिक साझेदारी में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। मैं राष्ट्रपति मिर्जियोयेव के साथ व्यापार और निवेश, डिजिटल संपर्क, रक्षा, ऊर्जा में हमारे सहयोग को और गहरा करने तथा विकसित भारत और यांगि उज्बेकिस्तान के हमारे साझा दृष्टिकोणों को आगे बढ़ाने पर अपनी चर्चाओं को लेकर उत्सुक हूँ। "

प्रधानमंत्री ने कहा कि वह ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज में शास्त्री स्मारक और महात्मा गांधी केंद्र का भी दौरा करेंगे, जो दोनों देशों को जोड़ने वाले घनिष्ठ सांस्कृतिक और जन–से–जन संबंधों के प्रति एक श्रद्धांजलि है।

श्री मोदी ने कहा कि ताशकंद से वह किर्गिज गणराज्य के राष्ट्रपति सादिर झापारोव के निमंत्रण पर 26वें एससीओ शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए बिश्केक की यात्रा करेंगे जो इस महत्वपूर्ण संगठन के 25 वर्ष पूरे होने का प्रतीक है। भारत 2017 से एससीओ का सक्रिय और रचनात्मक सदस्य रहा है।

उन्होंने कहा, " मैं क्षेत्र के लिए भारत के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक हूँ, जो सुरक्षा, संपर्क और अवसर पर आधारित है, और ऐसे क्षेत्र के लिए साथी सदस्यों के साथ काम करने के लिए उत्सुक हूँ जो आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद के संकट से मुक्त हो, जो हमारे पड़ोस और उससे आगे शांति और स्थिरता के लिए निरंतर खतरा बने हुए हैं।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि वह राष्ट्रपति झापारोव और अन्य एससीओ नेताओं से मिलने तथा छठे विश्व घुमंतू खेलों के उद्घाटन समारोह में भाग लेने के लिए भी उत्सुक हैं जो मध्य एशिया की समृद्ध जीवंत विरासत का उत्सव है, जिसका भारत गहरा सम्मान करता है।

ममता बनर्जी की बढ़ी मुश्किलें

पूर्व सीएम पर हाईकोर्ट के आदेश के उल्लंघन का आरोप, पुलिस ने दर्ज की एफआईआर

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और उनकी पार्टी के छात्र संगठन तृणमूल छात्र परिषद के आयोजकों के खिलाफ हेस्टिंग्स थाने में मामला दर्ज किया गया है। यह मामला 28 अगस्त को संगठन के स्थापना दिवस कार्यक्रम के दौरान कलकत्ता हाईकोर्ट के आदेश के कथित उल्लंघन को लेकर दर्ज किया गया है। शिकायत के अनुसार, कार्यक्रम में शामिल समर्थकों ने कथित तौर पर बैरिकेड हटा दिए और पुलिसकर्मियों के साथ धक्का–मुक्की की। इसके अलावा कैथेड्रल रोड पर यातायात भी बाधित हुआ। शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि कार्यक्रम अदालत की ओर से तय समय सीमा खत्म होने के बाद भी जारी रहा। मामला भारतीय न्याय संहिता की धाराओं 61(2), 223, 125(ए), 132 और 285 के तहत दर्ज किया गया है। तृणमूल कांग्रेस की अध्यक्ष ममता बनर्जी ने 28 अगस्त को अपने समर्थकों से राजनीतिक दबाव के आगे नहीं झुकने और भाजपा में शामिल नहीं होने की अपील की।

हमें अपने पड़ोसियों के साथ मजबूती से खड़ा होना चाहिए : खरगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ को लेकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखा है। उन्होंने नेपाल में फंसे भारतीयों की सुरक्षित वापसी और नेपाल को मानवीय मदद भेजने की मांग की है। प्रधानमंत्री को लिखे पत्र में खरगे ने कहा कि वह नेपाल में आई भीषण बाढ़ से बहुत चिंतित हैं, जिसमें बड़े पैमाने पर जान–माल का नुकसान हुआ है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार 600 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है और करीब दो हजार लोग अभी भी लापता हैं। हजारों

लोग भोजन, दवा, आश्रय और अन्य जरूरी मदद के लिए परेशान हैं। खरगे ने प्रधानमंत्री से अनुरोध किया कि नेपाल सरकार के साथ मिलकर बाढ़ प्रभावित लोगों को पर्याप्त मानवीय और राहत सहायता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने यह भी चिंता जताई कि बाढ़ के कारण नेपाल के अलग–अलग हिस्सों में कई भारतीय नागरिक और भारतीय मूल के लोग फंसे हुए हैं। उन्होंने कहा कि संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए जाएं कि बचाव और निकासी के प्रयासों को तेज किया जाए और उनकी सुरक्षित और जल्द भारत वापसी के लिए सभी जरूरी इंतजाम किए जाएं। विदेश मंत्रालय से मिली ताजा जानकारी का हवाला देते हुए मल्लिकार्जुन खरगे ने बताया कि नेपाल में करीब 320 भारतीय नागरिक अभी भी संपर्क में नहीं हैं, जिनका पता नहीं चल पा रहा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि भारत सरकार इस कठिन समय में हर संभव मदद के लिए तुरंत कदम उठाएगी।

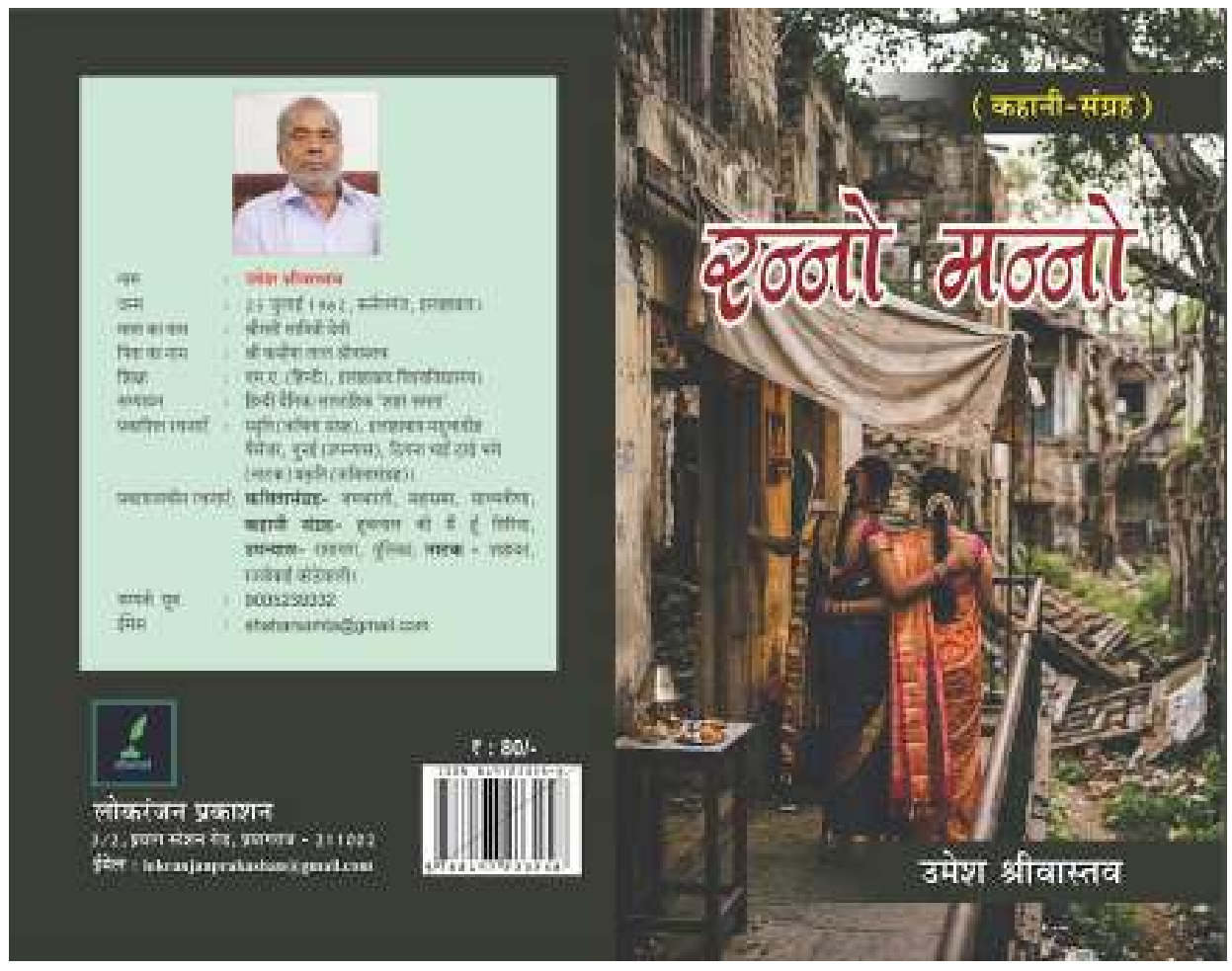

केपी कॉलेज के सामने बारिश और जलभराव के कारण तीन मंजिला भवन धराशायी, कोई जनहानि नहीं

प्रयागराज। शहर के जार्जटाउन इलाके में केपी कॉलेज के सामने स्वामी नारायण मंदिर परिसर में स्थित तीन मंजिला भवन धराशायी हो गया। इसका कारण लगातार बारिश और जलभराव माना जा रहा है। हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई है।

शहर के जार्जटाउन इलाके में केपी कॉलेज के सामने स्वामी नारायण मंदिर परिसर में स्थित तीन मंजिला भवन धराशायी हो गया। इसका कारण लगातार बारिश और जलभराव माना जा रहा है। गनीमत यह रही कि हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई है। घटना के चलते अफरातफरी मची हुई है। बड़ी संख्या में भीड़ मौके पर जुट गई। आसपास के मकानों में रहने वाले लोग भी दहशत में हैं। शहर में लगातार बारिश के कारण काफी दिक्कत हो रही है। कई इलाकों में जलभराव की समस्या काफी समय से बनी हुई है। इसी परिसर में स्वामी नारायण मंदिर भी है जो पूरी तरह से सुरक्षित है।

रेलवे बोर्डः सभी मेल-एक्सप्रेस ट्रेनें अब होंगी 24 कोच की, वेटिंग की समस्या से मिलेगी बड़ी राहत

प्रयागराज। रेल यात्रियों के लिए बड़ी राहत की खबर है। रेलवे बोर्ड ने मेल–एक्सप्रेस ट्रेनों में कोचों की संख्या बढ़ाने का फैसला किया है। अब 20 कोच वाली ट्रेनों में चार और 22 कोच वाली ट्रेनों में दो अतिरिक्त कोच स्थायी रूप से जोड़े जाएंगे। इससे वेटिंग लिस्ट कम होने और यात्रियों को कन्फर्म सीट मिलने की उम्मीद बढ़ेगी। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए रेलवे बोर्ड ने महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। इसके तहत उत्तर मध्य रेलवे (एनसीआर) समेत देश के सभी जोनल रेलवे की मेल–एक्सप्रेस ट्रेनों में कोचों की संख्या बढ़ाने का फैसला किया गया है। रेलवे बोर्ड के इस निर्देश के बाद एनसीआर का यांत्रिक विभाग पूरी मुस्तैदी से जुट गया है। जिन ट्रेनों में वर्तमान में 20 कोच हैं, उनमें चार और जिनमें 22 कोच हैं, उनमें दो अतिरिक्त कोच स्थायी तौर पर जोड़े जाएंगे। इस व्यवस्था से त्योहारी सीजन के साथ–साथ सालभर रहने वाली भारी भीड़भाड़ से काफी हद तक राहत मिलेगी। खास तौर पर भीड़भाड़ के दिनों में जो वेटिंग लिस्ट 100 से 150 तक पहुंच जाती है उसमें भी कमी आने की उम्मीद है। इससे यात्रियों को आसानी से कन्फर्म सीट मिलने की संभावना कई गुना बढ़ जाएगी। यदि वातानुकूलित तृतीय श्रेणी के दो कोच जुड़ते हैं तो 144 या स्लीपर के दो अतिरिक्त कोच जुड़ते हैं तो एक बार में अधिकतम 160 यात्रियों को इसका सीधा लाभ मिलेगा। वर्तमान में एनसीआर के अंतर्गत केवल प्रयागराज एक्सप्रेस ही एकमात्र ऐसी ट्रेन है जो 24 कोच के साथ चल रही है। एलएचबी रेक वाली ट्रेनों में ही कोच बढ़ाए जाएंगे।

एनसीआर की इन प्रमुख ट्रेनों में हैं 22 कोच

प्रयागराज–लालगढ़ सुपरफास्ट, सूबेदारगंज–श्रीमाता वैष्णो देवी कटड़ा जम्मू मेल, सूबेदारगंज–शहीद कैप्टन तुषार महाजन उधमपुर एक्सप्रेस, प्रयागराज–अहमदाबाद सुपरफास्ट, प्रयागराज–भिवानी जंक्शन कालिंदी एक्सप्रेस, प्रयागराज–डॉ. अंबेडकर नगर, प्रयागराज – नई दिल्ली हमसफर आदि में 22–22 कोच हैं। वहीं, कानपुर–नई दिल्ली श्रमशक्ति एक्सप्रेस 23 कोच के साथ संचालित हो रही है।

निश्चित ही ट्रेनों में स्थायी रूप से दो से तीन कोच जोड़े जाने से काफी हद तक प्रतीक्षा सूची कम होगी। त्योहारी सीजन में इससे यात्रियों को बड़ी राहत मिलेगी। एनसीआर में चरणबद्ध तरीके से ट्रेनों में कोच जोड़े जाएंगे। –डॉ. शिवम शर्मा, सीपीआरओ, एनसीआर।

सुबह बस स्टेशन पर रही भीड़, दोपहर में रही राहत, शाम तक फिर हो गई चहल पहल

प्रयागराज। रक्षाबंधन के पर्व पर महिलाओं को मिली मुफ्त बस सफर की सुविधा का बहनों ने जमकर लाभ उठाया। शहर से दूरदराज के क्षेत्रों में जाने वाली युवतियां और महिलाएं अपने सहयोगियों के साथ बसों में सवार होकर गंतव्य तक पहुंचीं।

रक्षाबंधन के पर्व पर महिलाओं को मिली मुफ्त बस सफर की सुविधा का बहनों ने जमकर लाभ उठाया। शहर से दूरदराज के क्षेत्रों में जाने वाली युवतियां और महिलाएं अपने सहयोगियों के साथ बसों में सवार होकर गंतव्य तक पहुंचीं, वहीं शहर के भीतर झूंसी, नैनी, फाफामऊ और सिविल लाइंस जाने वाले मार्गों पर ई–बसों में भी महिला यात्रियों की भारी भीड़ देखने को मिली। इस बीच विद्या वाहिनी बस स्टेशन पर सुबह भीड़ रही। दोपहर में थोड़ी राहत रही लेकिन शाम होते ही एक बार फिर से चहल–पहल हो गई। इसके पूर्व बृहस्पतिवार को यानी 27 अगस्त को प्रयागराज रीजन की रोडवेज बसों से करीब 55 हजार बहनों ने अपने एक सहयोगी के साथ पूर्णतः निःशुल्क यात्रा की। इसके अलावा शहर में संचालित 50 ई–बसों में भी दिनभर महिलाओं का तांता लगा रहा। सिटी बसों से कुल 10,600 यात्रियों ने सफर किया, जिनमें से 8,315 अकेली महिला यात्री थीं। यह खासी भीड़ नैनी, फाफामऊ, झूंसी, सिविल लाइंस और धूमनगंज रूट पर दर्ज की गई। पर्व के दौरान पहली बार चलाई गई डबल डेकर बस ने भी शहरवासियों को आकर्षित किया, जिसके ट्रायल के तौर पर करीब 90 महिलाओं ने सिविल लाइंस से अलोपीबाग और अलोपीबाग से पत्थर गिरजाघर तक मुफ्त सैर का आनंद लिया।

त्योहार के दूसरे दिन यानी 28 अगस्त को भी बसों में स्थानीय यात्रियों की अच्छी खासी भीड़ बनी रही। हालांकि, इस दौरान हुई बारिश ने यात्रियों की मुश्किलें जरूर बढ़ा दीं। विद्या वाहिनी मैदान में बनाए गए अस्थायी बस अड्डे का पूरा परिसर कीचड़ से सन गया और दोपहर की बारिश के बाद सड़कों पर भी पानी जमा हो गया। हालात यह थे कि यात्रियों को इसी कीचड़ और जलभराव के बीच से गुजरकर अपनी बसें पकड़नी पड़ीं।

प्रेम और विश्वास की डोर से बंधे भाई-बहन, धूमधाम से मना रक्षाबंधन

प्रयागराज। भाई–बहन के अटूट प्रेम, विश्वास और समर्पण का प्रतीक रक्षाबंधन पर्व प्रयागराज में परंपरागत उल्लास के साथ मनाया गया। बहनों ने भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर उनकी दीर्घायु और उज्ज्वल भविष्य की कामना की तो भाइयों ने भी बहनों को उपहार देकर उनकी खुशियों का संकल्प दोहराया। शहर से गांव तक त्योहार को लेकर उत्साह नजर आया। रेलवे स्टेशनों और रोडवेज बसों में भीड़ रही।

भाई–बहन के पवित्र रिश्ते का पर्व रक्षाबंधन शुक्रवार को प्रयागराज में पूरे उत्साह और पारंपरिक तरीके से मनाया गया। सुबह से ही घरों में त्योहार की तैयारियां शुरू हो गई थीं। बहनों ने भाइयों के माथे पर तिलक लगाकर आरती उतारी और उनकी कलाई पर रेशम की डोर बांधकर लंबी उम्र तथा सुख–समृद्धि की कामना की। भाइयों ने भी बहनों को यथोचित उपहार देकर उनकी रक्षा और सम्मान का संकल्प लिया।

रक्षाबंधन को लेकर बच्चों से लेकर युवाओं और बुजुर्गों तक में खासा उत्साह देखने को मिला। बाजारों में राखियों, मिठाइयों और गिफ्ट आइटम की दुकानों पर सुबह से ही ग्राहकों की भीड़ रही। रंग–बिरंगी और आकर्षक राखियों की खूब खरीदारी हुई। मिठाई की दुकानों पर भी लोगों ने जमकर खरीदारी की।

त्योहार पर अपने भाइयों के घर पहुंचने के लिए महिलाओं ने बड़ी संख्या में यात्रा की। रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों की भीड़ रही, वहीं रोडवेज बसों में भी सामान्य दिनों की अपेक्षा अधिक भीड़ देखी गई। मुफ्त बस यात्रा की सुविधा का लाभ उठाकर महिलाएं अपने मायके और भाइयों के घर पहुंचीं और राखी बांधी। इससे बस अड्डों पर दिनभर चहल–पहल बनी रही। प्रयागराज के साथ ही प्रतापगढ़ और कौशाम्बी में भी रक्षाबंधन का पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में घर–घर राखी बांधने की रस्म हुई। कई स्थानों पर परिवार के लोग एकत्र हुए और साथ में त्योहार मनाया।

मंत्री नंदी ने महिला पुलिसकर्मियों से बंधवाई राखी

कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी ने भी रक्षाबंधन का पर्व विशेष अंदाज में मनाया। उन्होंने पुलिस लाइन में महिला पुलिसकर्मियों से राखी बंधवाई। इसके बाद मुट्ठीगंज स्थित भाजपा कार्यालय में पार्टी की महिला कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने उन्हें राखी बांधी। क्षेत्र की महिलाओं ने आरती उतारकर तिलक लगाया और रक्षासूत्र बांधा। मंत्री ने सभी बहनों को शुभकामनाएं दीं और उनके सम्मान एवं सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता जताई।

बहनों ने मांगी भाइयों की लंबी उम्र

रक्षाबंधन पर बहनों ने पूजा की थाली सजाई। रोली, अक्षत और मिठाई के साथ भाइयों की आरती उतारी और उनकी कलाई पर राखी बांधी। इसके बाद भाइयों का मुंह मीठा कराया गया। भाइयों ने भी बहनों को उपहार देकर खुशियां साझा कीं।

बसों और ट्रेनों में बढ़ी भीड़

रक्षाबंधन पर बहनों के भाइयों के घर पहुंचने के कारण परिवहन व्यवस्था पर भी असर पड़ा। रेलवे स्टेशनों और रोडवेज बस अड्डों पर यात्रियों की भीड़ रही। महिलाओं ने मुफ्त यात्रा सुविधा का लाभ उठाते हुए बड़ी संख्या में सफर किया।

बाजारों में खूब हुई खरीदारी

राखी, मिठाई और गिफ्ट आइटम की दुकानों पर त्योहार का असर साफ दिखाई दिया। दुकानों पर सुबह से शाम तक ग्राहकों की आवाजाही बनी रही। बच्चों और युवाओं में आकर्षक डिजाइन वाली राखियों को लेकर विशेष उत्साह नजर आया। सेंट्रल जेल और जिला जेल नैनी में रक्षाबंधन पर्व पर जेल के अंदर सजा काट रहे बंदियों को रक्षा सूत्र बांधने के लिए उनकी बहनें पहुंचीं। सुबह नौ बजे के बाद मुलाकात शुरू कराई गई। जेल प्रशासन की ओर से पर्व को लेकर रक्षा सूत्र मिठाई रोली टीका की व्यवस्था की गई है।

बारिश के रोकी ट्रेनों की रफ्तारः पानी में डूबा प्रयागराज-मुंबई रेलमार्ग, लगा ट्रेन चलाएं या नाव

प्रयागराज। भारी बारिश ने प्रयागराज–मुंबई रेल रूट की रफ्तार पर ब्रेक लगा दिया। शनिवार सुबह चितहरा स्टेशन के पास रेलवे ट्रैक पानी में डूबने से अप और डाउन दोनों लाइनें प्रभावित हो गईं। करीब डेढ़ घंटे तक ट्रेनों का संचालन बाधित रहा, जिससे रेल महकमे में हड़कंप मच गया। सूचना मिलते ही प्रयागराज–मुंबई रूट की ट्रेनों को एहतियातन रोक दिया गया।

भारी बारिश के चलते शनिवार की सुबह प्रयागराज–मुंबई पर रेल संचालन तकरीबन डेढ़ घंटे बाधित रहा। उत्तर मध्य रेलवे (एनसीआर) प्रयागराज मंडल के मानिकपुर–सतना रेल खंड के चितहरा रेलवे स्टेशन के आसपास अप और डाउन लाइनें पूरी तरह से पानी में डूब गईं। यह जानकारी मिलते ही रेल महकमे में हड़कंप मच गया। सुबह साढ़े आठ बजे के आसपास पश्चिम मध्य रेलवे मुख्यालय जबलपुर ने

प्रयागराज मंडल के रेल मंडल प्रबंधक कार्यालय स्थित कंट्रोल रूम को इसकी सूचना भेजी। इसके बाद प्रयागराज से मुंबई रूट की तरफ जाने वाली ट्रेनों को रोके जाने का फरमान जारी कर दिया गया।

इस दौरान 12428 आनंद विहार–रीवा को मानिकपुर स्टेशन पर, 13201 राजेंद्र नगर–लोकमान्य तिलक टर्मिनल को डभौरा, 11304 दरभंगा–पुणे एक्सप्रेस को बरगढ़ स्टेशन और 09344 पटना–डॉ. अंबेडकरनगर स्पेशल को प्रयागराज के शंकरगढ़ रेलवे स्टेशन पर रोका गया। इस बीच चितहरा रेलवे स्टेशन के आसपास जलभराव वाले रेलवे ट्रैक पर दो मालगाड़ियां फंस गईं। उनके चालकों ने कंट्रोल रूम में जलभराव का वीडियो भी साझा किया।

किसी तरह से बाद में कॉशन लेकर धीमी गति से मालगाड़ियों को आगे बढ़ाया गया। सुबह 10 बजे के बाद ही रेलवे ट्रैक से पानी निकला और ट्रेनों की आवाजाही सामान्य कर दी गई।

इस संबंध में एनसीआर रेलवे के सीपीआरओ डॉ. शिवम शर्मा का कहना है कि बारिश के चलते रेलवे ट्रैक पर पानी भर गया था, जो अब निकाल लिया गया है।

बाढ़ का खतराः तेजी से बढ़ रहा गंगा-यमुना का जलस्तर, चेतावनी बिंदु के नजदीक पहुंच रहीं नदियां

प्रयागराज। प्रयागराज में गंगा और यमुना का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। दोनों नदियां चेतावनी बिंदु के करीब पहुंच रही हैं। तटवर्ती इलाकों में बढ़ी चिंता के बीच लोग सुरक्षित स्थानों की ओर जाने लगे हैं। प्रशासन ने अलर्ट घोषित कर बाढ़ चौकियों को सक्रिय कर दिया है। हालांकि फिलहाल गंगा और यमुना दोनों खतरे के निशान से नीचे हैं।

पहाड़ों और मैदानी क्षेत्रों में लगातार हो रही बारिश के बीच प्रयागराज में गंगा और यमुना का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। दोनों नदियां चेतावनी बिंदु के करीब पहुंचने लगी हैं, जिससे तटवर्ती इलाकों और निचले मोहल्लों में रहने वाले लोगों की चिंता बढ़ गई है। कई स्थानों पर लोग एहतियातन सुरक्षित स्थानों की ओर जाने लगे हैं। प्रशासन ने अलर्ट घोषित करते हुए बाढ़ चौकियों को सक्रिय कर दिया है।

केंद्रीय जल आयोग के शनिवार दोपहर के आंकड़ों के अनुसार, इलाहाबाद लेवल स्टेशन पर गंगा का जलस्तर 80.34 मीटर दर्ज किया गया, जबकि चेतावनी बिंदु 83.734 मीटर और खतरे का निशान 84.734 मीटर है। फाफामऊ में गंगा का जलस्तर 80.75 मीटर पहुंच गया है। यहां भी चेतावनी बिंदु 83.734 मीटर और खतरे का निशान 84.734 मीटर है।

वहीं नैनी में यमुना का जलस्तर 80.88 मीटर दर्ज किया गया है। यमुना का चेतावनी स्तर 83.74 मीटर और खतरे का निशान 84.74 मीटर निर्धारित है। आंकड़ों से साफ है कि फिलहाल दोनों नदियां खतरे के निशान से नीचे हैं, लेकिन जलस्तर में लगातार बढ़ोतरी को देखते हुए प्रशासन ने निगरानी बढ़ा दी है।

तटवर्ती क्षेत्रों में पुलिस, राजस्व और आपदा प्रबंधन की टीमें स्थिति पर नजर रख रही हैं। बाढ़ चौकियों को सक्रिय कर संभावित प्रभावित इलाकों की जानकारी जुटाई जा रही है। लोगों से नदी के किनारे और निचले इलाकों में जाने से बचने तथा प्रशासन के निर्देशों का पालन करने की अपील की गई है। जलस्तर बढ़ने का सिलसिला जारी रहा तो आने वाले घंटों में तटीय क्षेत्रों में मुश्किलें और बढ़ सकती हैं।

कॉपियों की पारदर्शी व्यवस्था के लिए डिजिटल मूल्यांकन का रुख, चल रहा है मंथन

प्रयागराज। माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) बोर्ड परीक्षा–2027 की उत्तर पुस्तिकाओं का डिजिटल मूल्यांकन कराने की तैयारी में है। हाल ही में इंप्रूवमेंट व कंपार्टमेंट परीक्षा की करीब 40 हजार उत्तर पुस्तिकाओं के डिजिटल मूल्यांकन की सफलता के बाद इसके विस्तार पर मंथन चल रहा है। माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) बोर्ड परीक्षा–2027 की उत्तर पुस्तिकाओं का डिजिटल मूल्यांकन कराने की तैयारी में है। हाल ही में इंप्रूवमेंट व कंपार्टमेंट परीक्षा की करीब 40 हजार उत्तर पुस्तिकाओं के डिजिटल मूल्यांकन की सफलता के बाद इसके विस्तार पर मंथन चल रहा है। डिजिटल मूल्यांकन से व्यवस्था को पारदर्शी और तकनीक आधारित बनाने की ओर रुख किया जा रहा है। सूत्रों के अनुसार, अनुभवों के आधार पर वर्ष 2027 की बोर्ड परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं के डिजिटल मूल्यांकन पर विचार चल रहा है। हालांकि, अंतिम निर्णय बोर्ड को करना है। बताया गया कि वर्ष 2026 में बोर्ड ने करीब तीन करोड़ उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन किया था। यूपी बोर्ड के सचिव भगवती सिंह ने कहा कि इंप्रूवमेंट एवं कंपार्टमेंट परीक्षा में डिजिटल मूल्यांकन सफल रहा है। इसके बाद मूल्यांकन में तकनीक का प्रयोग करने को लेकर मंथन जारी है।

जेन–जी के सवाल बने मुद्दाः हर दल मांगे इनका साथ, नई सियासत की प्रयोगशाला बना प्रयागराज, वामपंथी संगठन सक्रिय

प्रयागराज। दिल्ली के आंदोलन के बाद जेन–जी बने सियासत में प्रयोगशाला बन गए हैं। अब हर दल जेन–जी का साथ चाहता है। वामपंथी संगठनों ने भी स्थानीय स्तर पर सक्रियता बढ़ा दी है। पहले सपा, फिर कांग्रेस और अब लोजपा की प्रयागराज के युवाओं पर नजर है। जेन–जी के सवाल मुद्दा बन रहे हैं। सियासी दलों को उनमें वोट बैंक नजर आ रहा है। इनमें से कुछ पहली बार वोट डालेंगे तो तमाम ऐसे हैं जो शिक्षा और नौकरी पर खुली बहस कर माहौल गर्म किए हैं। पूर्वी यूपी से बिहार तक के ऐसे युवाओं का सबसे बड़ा केंद्र प्रयागराज है। इसीलिए जेन–जी वाली सियासत में संगमनगरी प्रयोगशाला बनती जा रही है।

पढ़ने–लिखने और समझने वाले डेढ़ से दो लाख युवा एक साथ मिल जाएं तो कौन सियासी दल उन्हें समझाने और अपने से जोड़ने के लिए आगे नहीं आएगा। सबसे पहले करीब दो माह पूर्व यहां समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव प्रबुद्ध सम्मेलन (29 जून) के बहाने जेन–जी की सियासी नब्ज टटोलने आए। इसके बाद आठ अगस्त को कांग्रेस के नेता व लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने श्छात्रों की गूंजश कार्यक्रम के जरिये प्रयागराज के युवाओं और प्रतियोगी छात्रों से सीधा संवाद किया। अब बारी एनडीए के नेताओं की है। गठबंधन के घटक दल लोजपा (रामबिलास) के सांसद व केंद्रीय मंत्री तथा युवा चेहरे चिराग पासवान ने प्रयागराज के युवाओं के जरिये उत्तर प्रदेश की सियासत में बड़ी दस्तक की तैयारी की है।

मध्य सितंबर में चिराग अपनी पार्टी लोक जनशक्ति पार्टी के श्नव संकल्प महासभाश अभियान को प्रयागराज से शुरू करने वाले हैं। यूपी की राजनीति को नजदीक से देखने वाले वरिष्ठ विश्लेषक एस. हनुमंतराव इसे चुनावी राजनीति में प्रयागराज की बढ़ती ताकत मानते हैं। वह कहते हैं कि आजादी के आंदोलन के दौर से अब तक युवा राजनीति की शांतिपूर्ण आवाज उत्तर प्रदेश से ही बुलंद होती रही है। लोजपा के नेता चिराग पासवान बिहार में पिछले विधानसभा चुनाव में युवाओं के बीच खासे लोकप्रिय रहे थे। परिणाम आने पर उनका स्ट्राइक रेट सबसे बेहतर रहा था। इसके बाद वह युवाओं के मुद्दों पर मुखर होकर बोलते भी हैं और उनकी बातें नई पीढ़ी को पसंद आती हैं। इसीलिए उन्होंने उत्तर प्रदेश में अपने चुनाव अभियान की शुरुआत के लिए प्रयागराज को चुना है। उनकी नजर जेन–जी पर है जो यहां दूर–दूर से आकर नौकरी के लिए परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। उनकी रैली की कमान भी जमुई से सांसद अरुण भारती को दी गई है जो खुद केंद्रीय विद्यालय से लेकर यूरोप तक पढ़ाई कर चुके हैं। अभी 50 साल के सांसद जेन–जी के मसलों पर चिराग के साथ काफी मुखर होकर बोलते रहे हैं। दिल्ली के जंतर–मंतर से उठे जेन–जी के आंदोलन में वामपंथी छात्र संगठनों आइसा और एसएफआई के सदस्यों की भागीदारी चर्चा में रही थी। इससे प्रयागराज में वामपंथी छात्र संगठनों की गतिविधियां तेज हो गई हैं। जेन–जी के तेवर देख एक ओर जहां आइसा के पुराने दिग्गज संगठन के नए सदस्यों को प्रेरित कर रहे हैं, वहीं विश्वविद्यालय और डेलीगेसी में भी पैठ बढ़ाने के लिए उनके मुद्दे पर आंदोलन कर रहे हैं। इविवि एक समय आइसा और एसएफआई का गढ़ था। इनके सदस्यों ने छात्रसंघ अध्यक्ष तक का चुनाव तक जीता था।

महिलाओं ने मुफ्त के सफर का उठाया आनंद, डबल डेकर बस में भी किया सफर

प्रयागराज। रक्षाबंधन के अवसर पर शुक्रवार को शहर से दूरदराज के क्षेत्रों को जाने वाली और वापस आने वाली रोडवेज की सभी बसें खचाखच भरी नजर आई। शहर के भीतर झूंसी, नैनी, फाफामऊ और सिविल लाइंस जाने वाले मार्गों पर ई–बसों में भी महिला यात्रियों की भारी भीड़ देखने को मिली।

रक्षाबंधन के अवसर पर शुक्रवार को शहर से दूरदराज के क्षेत्रों को जाने वाली और वापस आने वाली रोडवेज की सभी बसें खचाखच भरी नजर आई। शहर के भीतर झूंसी, नैनी, फाफामऊ और सिविल लाइंस जाने वाले मार्गों पर ई–बसों में भी महिला यात्रियों की भारी भीड़ देखने को मिली।

रोडवेज और ई–बसों में सवार सभी महिलाएं और उनके सहयोगी किराये के बचत की बात करते हुए बसों में खुशी–खुशी सवार हो गए लेकिन बसों में अधिक भीड़ के कारण गंतव्य तक पहुंचने में सारी खुशियां खर्च हो गई। विद्या वाहिनी बस स्टेशन पर सुबह लोगों की भीड़ के बाद दोपहर में थोड़ी राहत रही लेकिन शाम होते ही एक बार फिर से बस अड्डे पर भीड़ बढ़ गई।

इसके पूर्व बृहस्पतिवार को प्रयागराज रीजन की रोडवेज बसों से करीब 55 हजार बहनों ने अपने एक सहयोगी के साथ निशुल्क यात्रा की। इसके अलावा शहर में संचालित 50 ई–बसों में भी दिनभर महिलाओं का तांता लगा रहा। सिटी बसों से कुल 10,600 यात्रियों ने सफर किया, जिनमें से 8,315 अकेली महिला यात्री थीं। पर्व के दौरान पहली बार चलाई गई डबल डेकर बस ने भी शहरवासियों को आकर्षित किया।

बच्चियों को मिला मंच तो शब्दों में उतर आई भावनाये

2017 से पहले बेटियों के स्कूल जाने पर था संकट, आज मुख्यमंत्री आवास पहुंच कर रही संवाद-योगी

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश की बेटियों को मंच मिला तो उनकी भावनाएं शब्दों में उतर आईं। प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ के सामने बेटियां आत्मिक भाव से अपने हृदय के उद्गार व्यक्त करती रहीं, जिसे मुख्यमंत्री ने मुस्कुराते हुए बड़े ही उत्साह से सुना। उन्होंने बेटियों से संवाद किया, उन्हें सफल जीवन का श्आशीषश दिया और हर कदम पर सरकार के साथ होने का विश्वास भी दिलाया। रक्षाबंधन पर स्कूली छात्राओं ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को तिलक लगाकर राखी बांधी। मुख्यमंत्री ने बच्चियों को उपहार स्वरूप चॉकलेट और ओडीओपी बैग भेंट किए। एक छात्रा के आग्रह पर मुख्यमंत्री ने उसकी पॉकेट डायरी पर संदेश भी लिखा। छात्राओं से संवाद करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आज यहां जो दृश्य देखने को मिला है, यही उत्तर प्रदेश में आए परिवर्तन को दिखा रहा है। 2017 से पहले बेटियां इस तरह सुरक्षित और उन्मुक्त वातावरण में मुख्यमंत्री से न तो मिल सकती थीं और न ही सीध ो संवाद कर सकती थीं। आज बड़ी संख्या में बेटियां मुख्यमंत्री आवास पहुंचकर बिना किसी भय के सवाल और बातचीत कर अनुभव साझा कर रही हैं। आज न असुरक्षा का भय है और न ही किसी प्रोटोकॉल का डर है। 2017 से पहले बड़ा संकट यह था कि बेटियां स्कूल तक नहीं जा पाती थीं। कई अभिभावक बेटियों की पढ़ाई बंद कर देते थे या उन्हें घर से दूर दूसरे प्रदेशों के हॉस्टल में रखने को मजबूर होते थे। जिस समय बेटी को अपने माता–पिता का सबसे अधिक संरक्षण मिलना चाहिए, उस समय उसका दूर रहना मजबूरी बन जाता था। आज परिस्थितियां बदल चुकी हैं और बेटियां सुरक्षित वातावरण में शिक्षा हासिल कर रही हैं। प्रदेश सरकार ने बेटी के जन्म से लेकर उसकी स्नातक तक की पढ़ाई के लिए योजनाबद्ध तरीके से व्यवस्थाएं की हैं। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के माध्यम से बेटियों को सहायता दी जा रही है। शादी योग्य होने पर मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के जरिए मदद उपलब्ध कराई जा रही है। स्कूल और कॉलेज में पढ़ने वाली बेटियों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की गई है। मेधावी छात्राओं के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए स्नातक स्तर की 50 हजार मेधावी बेटियों को स्कूटी प्रदान करने की योजना भी आगे बढ़ाई जा रही है। अब बेटी किसी से कम नहीं है। 2017 से पहले उत्तर प्रदेश पुलिस में महिला पुलिसकर्मियों की संख्या महज करीब 10 हजार थी। आज यह संख्या बढ़कर 45 हजार हो चुकी है और जल्द ही यह आंकड़ा 50 हजार तक पहुंचने वाला है। इसका परिणाम है कि बेटियां हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। बेटियों की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन का सीध ा संबंध प्रदेश के विकास से है। आज उत्तर प्रदेश की बेटियां जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़कर प्रदेश और देश को आगे ले जाने में योगदान दे रही हैं। यह बदलाव केवल योजनाओं का परिणाम नहीं, बल्कि बदलते उत्तर प्रदेश की तस्वीर है। कभी बीमारू राज्य के रूप में पहचाना जाने वाला उत्तर प्रदेश आज तेजी से आगे बढ़ रहा है और भारतीय अर्थव्यवस्था का ग्रोथ इंजन बनकर उभर रहा है। बेटियों की सुरक्षा, शिक्षा, सम्मान और स्वावलंबन इसी परिवर्तन की महत्वपूर्ण तस्वीर है।इस दौरान 75 जनपदों की छात्राओं की वीडियो क्लिप भी प्रदर्शित की गई। इसमें छात्राओं ने अपना परिचय देते हुए मुख्यमंत्री को रक्षाबंधन की बधाई दी और उन्हें राखी भेजने की बात कही। इस दौरान कई छात्राओं ने अनुभव साझा करते हुए मुख्यमंत्री के सामने अपनी आकांक्षाएं और सवाल भी रखे। कक्षा आठ की शैल कुमारी ने कहा कि उनके स्कूल में कंप्यूटर लैब की सुविध ाा है और वह कंप्यूटर चलाना भी सीख चुकी हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री को धन्यवाद देते हुए कहा कि सरकार की ओर से विद्यार्थियों को सारी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे आगे बढ़ने का अवसर मिल रहा है।पायनियर मॉन्टेसरी इंटर कॉलेज की कक्षा आठ की छात्रा समृद्धि वर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री जी से आमने–सामने मिलना मेरे लिए गोल्डेन अपॉर्च्युनिटी रहा। बचपन से सीएम सर को टीवी पर देखती थी। उनसे आमने–सामने मिलने की इच्छा रक्षाबंधन पर पूरी हो गई। श्री

गुरु नानक गर्ल्स इंटर कॉलेज की कक्षा सात की छात्रा आयशा बानो ने सीएम से कहा कि आपसे मिलकर और आपका आशीर्वाद पाकर बेहद खुशी हुई। आपका आशीर्वाद हमेशा बच्चों पर बना रहे।कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय मलिहाबाद की कक्षा नौ की छात्रा वैष्णवी पाल ने मुख्यमंत्री से मुलाकात को जीवन का बेहद खास अवसर बताया। उसने कहा कि टीवी पर मुख्यमंत्री को देखकर मेरे मन में भी उनकी तरह नेता बनने की इच्छा पैदा हुई। मुख्यमंत्री से मिलने की जानकारी मिलने के बाद वह इस दिन का इंतजार कर रही थी। वैष्णवी ने बताया कि वह हॉकी खिलाड़ी है और राष्ट्रीय स्तर पर चयनित हुई है। कस्तूरबा गांधी विद्यालय में मिली सुविधाओं और शिक्षकों के मार्गदर्शन ने उसे आगे बढ़ने का अवसर दिया। दिव्या ने बताया कि पहले उसका स्कूल कक्षा आठ तक था, लेकिन अब कक्षा नौ से 12वीं तक की पढ़ाई की सुविधा मिलने से वह बेहद खुश है। द संस्कृति स्कूल लखनऊ की छात्राओं ने मुख्यमंत्री से संवाद किया। एक छात्रा ने शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों और उन्हें उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं के लिए मुख्यमंत्री का धन्यवाद किया। आज के दौर में तकनीक महत्वपूर्ण है, लेकिन उसकी भी सीमा और आवश्यकता है। तकनीक का इस्तेमाल आवश्यकता के अनुरूप होना चाहिए। स्मार्टफोन आज की पीढ़ी का बहुत अधिक समय खर्च कर रहा है। अगर किसी मशीन या तकनीक पर हमारी निर्भरता इतनी बढ़ जाए कि वह हमारी सोचने–समझने की क्षमता और रचनात्मकता को कमजोर करने लगे, तो उससे दूरी बनाना जरूरी है।मुख्यमंत्री ने उदाहरण दिया कि एक समय लोग बिना कैलकुलेटर के गिनती और पहाड़े याद रखते थे तथा गणित के सवालों का तत्काल जवाब दे देते थे। कैलकुलेटर पर निर्भरता बढ़ने के साथ लोगों की याददाश्त पर भी इसका असर पड़ा। स्मार्टफोन डिजिटल लाइब्रेरी, अच्छे शैक्षिक कंटेंट और ऑनलाइन शिक्षा के लिए उपयोगी माध्यम हो सकता है। पाठ्यक्रम और प्रतियोगी परीक्षाओं से जुड़ी महत्वपूर्ण सामग्री हासिल करने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए, लेकिन इसमें उपलब्ध हर सामग्री हमारे हित में हो, यह जरूरी नहीं है। अनावश्यक कंटेंट से दूरी बनाए रखना जरूरी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अच्छे और बुरे, दोनों कंटेंट मौजूद हैं। इसलिए केवल आवश्यकता, पाठ्यक्रम व प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी सामग्री ही देखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं स्वयं बहुत कम बमुश्किल आधा घंटा स्मार्टफोन का उपयोग करता हूं और वह भी राज्य से जुड़े किसी महत्वपूर्ण विषय या मुद्दे के लिए। अन्यथा स्मार्टफोन का इस्तेमाल नहीं करता। मुझे मालूम है कि स्मार्टफोन मेरा अधिक समय खराब कर सकता है और इससे प्रदेश के विभिन्न मुद्दों पर काम करने के लिए जरूरी समय प्रभावित हो सकता है। सीएम ने छात्राओं से कहा कि आपको भी स्मार्टफोन से दूरी बनानी चाहिए। संवाद के दौरान संस्कृति विद्यालय की छात्रा श्रेजा ने मुख्यमंत्री से पूछा कि देश में सबसे अधिक आबादी वाले उत्तर प्रदेश को वह कैसे संभालते हैं। इस पर मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश में 25 करोड़ से अधिक आबादी रहती है, लेकिन यह आबादी चुनौती नहीं बल्कि प्रदेश की संभावनाओं को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

मिला भादो से सावन

(कुण्डलिया)

सावन का अन्तिम दिवस, पावन शुभ संदेश।
हरे–भरे संबन्ध से, चुनना हरदम क्लेश।
चुनना हरदम क्लेश, बोलना मीठा–तीखा।
जिसमें हो वह सत्य,रहे जो पुष्प–सरीखा।
रिश्ते तभी प्रदीप,लगेंगे सबको भावन।
करके प्रेम प्रणाम,मिला भादो से सावन।।

सावन की शिव–साधना,पावन प्रेम–मिलाप।
बयाँ कर रही पूर्णिमा,सबका हरके ताप।
सबका हर के ताप, खुशी अंतस में भरके।
बनकर शुभ त्योहार,सभी के दिल में बसके।
सुन लो कहें प्रदीप,चहकते हैं घर–आँगन।
सबको दे मुस्कान,जा रहा है अब सावन।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

खेलों से होगा बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास

राष्ट्रीय खेल दिवस पर अमरनाथ विद्या आश्रम में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन

मथुरा। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर जनपद की प्रमुख शिक्षण संस्था अमरनाथ विद्या आश्रम के खेल परिसर में हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती मनाई गई। विद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने मेजर ध्यानचंद के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर कबड्डी, रस्साकसी, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, खो–खो, डॉजबॉल और हॉकी सहित विभिन्न

राष्ट्रीय खेल दिवस पर अमरनाथ विद्या आश्रम में हुआ विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन

खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने उत्साह और जोश के साथ प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्यार्थियों को खेल शपथ दिलाई गई।

विद्यालय के प्रधानाचार्य ने खिलाड़ियों को अनुशासन और खेल भावना के साथ प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय के कोऑर्डिनेटर शुभम वाजपेयी ने कहा कि खेल जीवन का अभिन्न अंग हैं। खेलों से बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक बच्चे को खेलने का समान अवसर मिलना चाहिए और विद्यार्थियों को भारतीय पारंपरिक खेलों को भी अपनाना चाहिए।

उन्होंने विद्यार्थियों को मेजर ध्यानचंद के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग भी सुनाए और उनके संघर्ष तथा उपलब्धियों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। कबड्डी के बालक वर्ग में कक्षा 12 की टीम विजेता और कक्षा 10 की टीम उपविजेता रही। बालिका वर्ग में कक्षा 12 की छात्राओं ने कक्षा 10 की छात्राओं को हराकर ट्रॉफी अपने नाम की। जूनियर वर्ग में कक्षा 7 की टीम ने कक्षा 8 की टीम को पराजित कर खिताब जीता।

प्रतियोगिताओं में निर्णायक की भूमिका खेल विभाग के वरिष्ठ खेल शिक्षक महेन्द्र राजपूत, असलम खान और देवेश कुमार ने निभाई। इस अवसर पर सुनील तिवारी, अनुराग शर्मा सहित विद्यालय के सभी शिक्षकों ने छात्र खिलाड़ियों को राष्ट्रीय खेल दिवस की बधाई देते हुए उनका उत्साहवर्धन किया।

प्रदेश में थमी मानसून की रफ्तार, फिलहाल बारिश की चेतावनी नहीं

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश में बीते दिनों हुई बारिश के बाद शनिवार को कई इलाकों में बारिश की रफ्तार कुछ धीमी नजर आई।आसमान में बादल छाए रहने के बीच लोगों को बारिश से राहत मिली। हालांकि मौसम विभाग के ताजा पूर्वानुमान के मुताबिक प्रदेश के अलग–अलग हिस्सों में बारिश का दौर अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार एक सितंबर तक प्रदेश में पूर्वी और पश्चिमी दोनों संभाग में कहीं भी भारी बारिश की चेतावनी नहीं हैद्यबारिश की रफ्तार धीमी पड़ने से जलभराव वाले क्षेत्रों में भी लोगों को कुछ राहत मिलने की उम्मीद है। हालांकि निचले इलाकों और नदी किनारे रहने वाले लोगों को मौसम विभाग के अपडेट पर नजर बनाए रखने की सलाह दी गई है।

'डाक अदालत' आठ सितम्बर को

लखनऊ (संवाददाता)। डाक सेवाओं से संबंधित आम जनता की शिकायतों के त्वरित निस्तारण हेतु 8 सितम्बर को प्रातः 11 बजे लखनऊ जीपीओ में 'डाक अदालत' का आयोजन किया जायेगा।। डाक अदालतें नागरिक–केंद्रित व्यवस्था के रुप में स्थापित की गई हैं, जिनका उद्देश्य ग्राहकों को डाक सेवाओं से संबंधित शिकायतों के शीघ्र एवं प्रभावी समाधान के लिये एक उपयुक्त मंच उपलब्ध कराना है।आम नागरिक लखनऊ जीपीओ द्वारा प्रदान की जाने वाली डाक सेवाओं से संबंधित अपनी शिकायतें या अभ्यावेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। शिकायतें चीफ पोस्टमास्टर, लखनऊ जीपीओ लखनऊ को 5 सितम्बर तक प्राप्त हो जानी चाहिये।आवेदन डाक स्पीड पोस्ट, व्यक्तिगत रुप से अथवा लखनऊ जीपीओ की ईमेल आई.डी. lucknowgpo@indiapost.gov.in o gpolucknow@gmail.com पर प्रेषित किये जा सकते हैं। लिफाफे पर 'डाक अदालत' अंकित होना चाहिये।

यूपी में 80 सीटों का सर्वे : अब चुनाव में होगी करारी जंग

लखनऊ (संवाददाता)। यूपी की राजनीति में एक बार फिर बड़ा उलटफेर होता दिख रहा है। इंडिया टुडे और सी–वोटर के अगस्त 2026 मूड ऑफ द नेशन सर्वे ने राज्य में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के लिए चिंता बढ़ाने वाले आंकड़े पेश किए हैं।ताजा सर्वे के अनुसार अगर आज लोकसभा चुनाव होते हैं तो उत्तर प्रदेश की 80 सीटों में से विरोधी दल इंडिया ब्लॉक सत्ताधारी एनडीए गठबंधन पर बढ़त बनाता नजर आ रहा है।अगस्त 2026 के सर्वे में 80 सीटों वाले उत्तर प्रदेश में इंडिया ब्लॉक को 41 सीटें मिलने का अनुमान जताया गया है, जबकि बीजेपी के नेतृत्व वाले एनडीए को 38 सीटों पर जीत मिल सकती है। यह आंकड़ा इसलिए अहम माना जा रहा है क्योंकि जनवरी 2026 के सर्वे में तस्वीर बिल्कुल उलट थी। उस समय एनडीए को 48 सीटें और इंडिया ब्लॉक को सिर्फ 31 सीटें मिलने का अनुमान लगाया गया था। महज कुछ महीनों के भीतर एनडीए की झोली से 10 संभावित सीटें कम हुई हैं, जबकि इंडिया ब्लॉक ने 10 सीटों की बढ़त हासिल की है।वोट प्रतिशत के मामले में एनडीए अभी भी मामूली बढ़त बनाए हुए है। सर्वे के मुताबिक एनडीए को 42 फीसदी वोट मिलने का अनुमान है, जिसमें जनवरी के मुकाबले 5 प्रतिशत अंक की गिरावट आई है। दूसरी ओर इंडिया ब्लॉक को 40 फीसदी वोट शेयर मिलने का अनुमान है, जो जनवरी से 2 फीसदी कम है। वोट शेयर अधिक होने के बावजूद सीटों के समीकरण में इंडिया ब्लॉक आगे निकल रहा है।

सबकी समस्या का समाधान सरकार की प्रतिबद्धता-योगी

जनता दर्शन, सीएम ने सुनीं लोगों की समस्याये, अफसरो को दिये दिशा निर्देश

लखनऊ (संवाददाता)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर में सुबह गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन में विभिन्न जिलों से आए लोगों से की समस्याएं सुनीं। उन्होंने कहा कि बिना भेदभाव, हर व्यक्ति की समस्या का समाधान कराने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। सीएम योगी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनता की शिकायतों का निस्तारण संवेदनशीलता और शीघ्रता से किया जाए। उन्होंने हर पात्र व्यक्ति को जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिलाने, जरूरतमंदों के समुचित इलाज की व्यवस्था करने और जमीन कब्जाने वाले भू माफिया व दबंगों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करने के निर्देश दिए। महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के बाहर जनता दर्शन कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ करीब 200 लोगों से मिले। कुर्सियों पर बैठे लोगों तक वह खुद गए। उनकी समस्याओं व शिकायतों को ध्यान से सुना। सबके प्रार्थना पत्रों को संबंधित अधिकारियों को संदर्भित करते हुए त्वरित और संतुष्टिपरक निस्तारण का निर्देश देने के साथ लोगों को भरोसा दिलाया कि हर पीड़ित की समस्या का पारदर्शी समाध ान कराया जाएगा। कुछ लोग गंभीर बीमारियों के उपचार के लिए आर्थिक मदद की गुहार लेकर आए थे। इन लोगों से मुख्यमंत्री ने कहा कि धन के अभाव में किसी का इलाज नहीं रुकेगा। अधिकारियों को निर्देश दिए कि जो भी जरूरतमंद हैं, प्रशासन उनके उच्च स्तरीय इलाज का एस्टीमेट शीघ्रता से बनवाकर उपलब्ध कराए, सरकार तुरंत धन उपलब्ध कराएगी। राजस्व और कानून व्यवस्था से जुड़े मामलों में शीघ्रता से

निस्तारण के निर्देश दिए। जनता दर्शन में कुछ लोग पारिवारिक विवादों के मामले भी लेकर आए थे। इस पर मुख्यमंत्री ने अधि ाकारियों को निर्देशित किया कि पारिवारिक विवादों में सर्वप्रथम सबंधित पक्षों के बीच संवाद कराने की पहल की जाए। गोरखनाथ मंदिर प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री की दिनचर्या परंपरागत रही। गुरु गोरखनाथ का दर्शन पूजन करने तथा अपने गुरुदेव ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की प्रतिमा समक्ष शीश झुकाने के बाद वह मंदिर परिसर के भ्रमण पर निकले। मंदिर की गोशाला में पहुंचकर गोसेवा की। मुख्यमंत्री ने गायों और गोवंश को स्नेहिल भाव से पूड़ी–गुड़ खिलाया।

'भाजपा सरकार द्वारा रायपुर की बिजली के निजीकरण का विरोध'

बिजली, एयरपोर्ट सहित तमाम सार्वजनिक संस्थानों को मुनाफाखोर कॉर्पोरेट कंपनियों के हवाले करना बंद करो!'

लखनऊ (संवाददाता)। छत्तीसगढ़ की जनता के लिए गंभीर चिंता का विषय है कि रायपुर क्षेत्र की बिजली वितरण व्यवस्था को निजी हाथों में सौंपने का प्रयास किया जा रहा है। टाटा पावर द्वारा रायपुर जिले के रायपुर, धरसींवा, मंदिर हसौद और अभनपुर तहसीलों में बिजली वितरण लाइसेंस के लिए आवेदन किए जाने की प्रक्रिया सार्वजनिक क्षेत्र की बिजली व्यवस्था के निजीकरण की दिशा में एक खतरनाक कदम है। देशी विदेशी कॉरपोरेट घरानों की सेवक भाजपा इसी कड़ी में रायपुर एयरपोर्ट सहित तमाम सार्वजनिक संस्थानों को कौड़ी के मोल बेच रही है जिनको बनाने में उसका तनिक भी योगदान नहीं है।फासिस्ट संघ परिवार अपने चहेते कॉरपोरेट अडानी को मुनाफा पहुंचाने के लिए पुराने मीटर को जबरन हटाकर स्मार्ट मीटर लगाया जा रहा है। बिजली आज केवल एक व्यापारिक वस्तु नहीं, बल्कि आम जनता के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, छोटे उद्योग, रोजगार तथा घरेलू जीवनकृ सभी बिजली पर निर्भर हैं। इसलिए बिजली जैसी आवश्यक सार्वजनिक सेवा को मुनाफाखोर कॉर्पोरेट कंपनियों के हवाले करना जनता के हितों के विरुद्ध है। निजी कंपनियों का मूल उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना होता है, जबकि सरकारी बिजली व्यवस्था का दायित्व समाज के सभी वर्गों तक बिजली पहुंचाना है।पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी मॉडल) या निजीकरण से बिजली की दरों और विभिन्न शुल्कों में वृद्धि का खतरा बढ़ेगा। गरीब मेहनतकश परिवारों, किसानों, छोटे व्यापारियों तथा कमजोर तबकों को मिलने वाली रियायतों और सब्सिडी पर भी भविष्य में खतरा उत्पन्न हो सकता है।

निजीकरण का एक गंभीर खतरा बिजली कर्मचारियों और मजदूरों के सामने भी पैदा होगा। लागत कम करने और मुनाफा बढ़ाने के नाम पर कर्मचारियों की संख्या में कटौती, नई भर्ती पर रोक, सेवा शर्तों में बदलाव तथा ठेका प्रथा को बढ़ावा दिया जा सकता है। बिजली व्यवस्था जैसे अत्यंत जोखिमपूर्ण क्षेत्र में अस्थायीकरण और ठेकाकरण न केवल कर्मचारियों के अधि ाकारों पर हमला है, बल्कि बिजली आपूर्ति की गुणवत्ता और जनता की सुरक्षा के लिए भी खतरा पैदा कर सकता है। हम यह भी सवाल उठाते हैं कि जनता के करों और सार्वजनिक धन से दशकों में निर्मित बिजली का विशाल ढांचाकृबिजली लाइनें, सब–स्टेशन और वितरण नेटवर्ककृका उपयोग निजी कॉर्पोरेट कंपनी किस शर्त पर करेगी? क्या लाभदायक शहरी और औद्योगिक उपभोक्ताओं से होने वाली आय निजी कंपनी के हाथ में चली जाएगी, जबकि कम लाभदायक और ग्रामीण क्षेत्रों की जिम्मेदारी सरकारी कंपनी पर छोड़ दी जाएगी? छत्तीसगढ़ सरकार और संबंधि ात नियामक संस्थाओं को जनता के सामने स्पष्ट करना चाहिए – रायपुर क्षेत्र की बिजली वितरण व्यवस्था में निजी कंपनी के प्रवेश से आम उपभोक्ताओं की बिजली दरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

यूपी में गोवंश संख्या में 37.18% कमी की जाँच की मांग

लखनऊ (संवाददाता)। आजाद अधिकार सेना के राष्ट्रीय अध यक्ष अमिताभ ठाकुर ने 2019 से 2024 के 5 वर्षों में उत्तर प्रदेश में गोवंश तथा महिषवंश की संख्या में भारी कमी को अत्यंत गंभीर लोकहित का विषय बताते हुए मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश शासन से इसकी स्वतंत्र उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा गोवंश संरक्षण, संवर्धन एवं गोआश्रय व्यवस्था को लगातार अत्यंत उच्च प्राथमिकता दी गई है तथा इस दिशा में बड़े पैमाने पर सरकारी संसाधन लगाए गए हैं। इसके विपरीत उत्तर प्रदेश पशुधन विकास परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के 07 अगस्त 2026 के पत्र के अनुसार 20वीं पशुगणना (2019) की तुलना में 21वीं पशुगणना (2024) के आधार पर गोवंश में 37.18: और महिषवंश में 25.94: कमी दर्ज की गई है। इसी के आधार पर 2026–27 के कृत्रिम गर्भाधान के लक्ष्य को कम करने की बात कही गई है। अमिताभ ठाकुर ने सवाल उठाया कि जब गोवंश संरक्षण सरकार की प्रमुख प्राथमिकता रही है और इस पर वर्षों से सार्वजनिक धन खर्च किया गया है, तो इतनी बड़ी कमी क्यों हुई और इसके लिए उत्तरदायी कौन है? उन्होंने मुख्य सचिव से इसकी उच्चस्तरीय जांच कर लापरवाही तथा संभावित भ्रष्टाचार हेतु जिम्मेदारी निर्धारित किये जाने की मांग की है।

किसानों की विभिन्न समस्याओं को लेकर भाकियू डीसीपी दक्षिणी से मिला

लखनऊ (संवाददाता)। किसानों की विभिन्न समस्याओं एवं थाना स्तर से संबंधित मामलों को लेकर भारतीय किसान यूनियन (अंबावता) का प्रतिनिधिमंडल आज डीसीपी दक्षिणी, लखनऊ से मिला। प्रतिनिधिमंडल ने किसानों से संबंधित विभिन्न समस्याओं, थाना स्तर पर लंबित प्रकरणों तथा पुलिस से संबंधित शिकायतों को डीसीपी दक्षिणी के समक्ष प्रमुखता से रखा। इस दौरान डीसीपी दक्षिणी के साथ सौहार्दपूर्ण एवं सकारात्मक वार्ता हुई। उन्होंने किसानों की समस्याओं को गंभीरता से सुना और संबंधित मामलों में नियमानुसार कार्रवाई करते हुए समाधान का रास्ता निकालने का आश्वासन दिया। वार्ता के बाद किसानों की समस्याओं के समाधान की दिशा में सकारात्मक पहल की उम्मीद जगी है। संगठन ने कहा कि भारतीय किसान यूनियन (अंबावता) किसानों के अधिकारों और समस्याओं के समाधान के लिए लगातार आवाज उठाता रहेगा।

सम्पादकीय.....

आत्महंता होनहार

राजस्थान के कोटा से एक और दुखद खबर आई। मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट की तैयारी कर रही 20 वर्षीय छात्रा ने फंदा लगाकर जान दे दी। इसके अलावा विचलित करने वाली यह खबर भी है कि पिछले पांच सालों में देश के प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थान आईआईटी में 70 होनहारों ने आत्महत्या की। गंभीर चिंता यह भी कि जुलाई से शुरू हुए सत्र में अब तक आईआईटी के तीन और आईआईएम का एक छात्र आत्महत्या कर चुका है। वहीं आईआईएससी बंगलूरु में भी पंद्रह दिन में दो छात्रों ने आत्मघात किया है। विडंबना यह है कि इन आंकड़ों में देश के अन्य शिक्षण संस्थानों के आत्मघात के मामले शामिल नहीं किए जाते हैं। जिससे देश में आत्महत्या करने वाले छात्रों की वास्तविक तस्वीर सामने नहीं आ पाती। यह अकल्पनीय है कि जिन इंजीनियरिंग संस्थानों में दाखिला लेना छात्रों का सपना होता है, वहां पहुंचकर कोई छात्र आत्महत्या क्यों कर लेता है? विचारणीय प्रश्न है कि आखिर ये छात्र आत्मघाती कदम क्यों उठा रहे हैं? क्या वे इंजीनियरिंग आदि के पाठ्यक्रम के साथ साम्य नहीं बैठा पाते? क्या सिस्टम की खामियां उन्हें हताश करती हैं? क्या ग्रामीण पृष्ठभूमि से आए हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के छात्र अंग्रेजी के पाठ्यक्रम के साथ तालमेल नहीं बैठा पाते हैं? अक्सर चर्चा होती है कि उच्च इंजीनियरिंग संस्थानों में देश के चर्चित व महंगे अंग्रेजी स्कूलों से आए छात्रों द्वारा भाषा,जाति, ग्रामीण पृष्ठभूमि तथा आर्थिक स्तर पर अन्य छात्रों के साथ भेदभाव किया जाता है। आरोप है कि अंग्रेजी माध्यम से आये छात्र हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं से पढ़ाई करके आए छात्रों को हेय दृष्टि से देखते हैं। आरोप तो यहां तक हैं कि कुछ शिक्षक भी ऐसे छात्रों के प्रति दुराग्रह रखते हैं। कमोबेश ऐसी चिंताएं ग्रामीण पृष्ठभूमि व वंचित समाज से आए छात्रों को लेकर भी सामने आती हैं। नये छात्रों को परिसर तथा छात्रावासों में भेदभाव जैसी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। फलतरू इन छात्रों का आत्मविश्वास डिगता है। कालांतर वे अपनी कक्षाओं की पढ़ाई के साथ साम्य नहीं बना पाते व हताशा में आत्मघात की राह चुनते हैं।

इंजीनियरिंग व प्रबंधन से जुड़े देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों की आत्महत्या की बढ़ती घातक प्रवृत्ति के मद्देनजर सरकार ने मामले की पड़ताल के लिए पिछली जनवरी में तीन सदस्यीय समिति गठित की थी। इस समिति ने भी स्वीकार किया था कि व्यवस्था में कुछ खामियां जरूर हैं, जिसके चलते छात्र आत्मघात के लिये बाध्य होते हैं। दरअसल, कुछ छात्र शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक आकांक्षाओं के बोझ के साथ अध्ययन कर रहे होते हैं। जिससे उनके मन में यह भय पैदा हो जाता है कि क्या वे अपने जीवन के लक्ष्य हासिल भी कर पाएंगे? बड़ी संख्या में मध्यमवर्गीय, गरीब परिवारों व वंचित समाज की प्रतिभाएं खून–पसीना एक करके इन संस्थानों में दाखिला लेती हैं। उन पर मानसिक दबाव होता है कि परिवार ने पेट काटकर और कर्ज आदि लेकर उन्हें महंगे इंजीनियरिंग व प्रबंधन संस्थानों में दाखिला दिलाया है। यदि वे असफल हुए तो परिवार को क्या मुंह दिखाएंगे? दूसरा, हमारे समाज में इंजीनियर, प्रबंधक व डॉक्टर बनने की भेड़चाल चल रही होती है। ईश्वर हर बच्चे की रचना उसके विशिष्ट गुण के साथ करता है। जरूरी नहीं है कि इंजीनियरिंग में दाखिला लेने वाले हर छात्र की रुचि इंजीनियरिंग में ही हो। कोई छात्र मानविकीय संकाय की प्रतिभा हो सकता है। इंजीनियरिंग, उसकी रुचि व मन का विषय नहीं हो सकता, जिसके चलते वो पूरे मनोयोग से इस पाठ्यक्रम से साम्य नहीं बैठा पाता। आज सोशल मीडिया की विकृतियां तमाम छात्रों की एकाग्रता को बाधित कर रही हैं। सोशल मीडिया उनमें हताशा व आवेश भर रहा है। नये वातावरण से साम्य न बैठा पाने व अन्य कारणों से छात्र मानसिक तनाव में आ जाते हैं। विडंबना यह है कि अधिकांश संस्थानों में मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ नहीं हैं। बताया जाता है कि केवल दस फीसदी संस्थानों में ऐसी व्यवस्था है। अन्य संस्थानों में जरूरत पड़ने पर विशेषज्ञों को बुलाया जाता है। दरअसल,भारत में मानसिक समस्याओं पर डॉक्टर से सलाह लेने में बचा जाता है। छात्रों की चिंता होती है कि कहीं शिक्षक, छात्र व परिवार के लोग उन्हें मनोरोगी न घोषित कर दें। निश्चित ही देश की इन प्रतिभाओं को असमय काल–कवलित होने से बचाने की सख्त जरूरत है।

जन-विरोधी है केंद्र की चीनी नीति, गरीबों के लिए इसे खरीदना मुश्किल

केंद्री उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने कीमतों में इस बढ़ोतरी के लिए उम्मीद से कम घरेलू उत्पादन, फसल को नुकसान, वैश्विक आपूर्ति में कमी, त्योहारी सीजन से पहले बढ़ी हुई मांग, और उद्योग के कुछ वर्गों द्वारा सट्टेबाजी और जमाखोरी को जिम्मेदार ठहराया है। मंत्रालय ने जो भी कहा है, उससे यह स्पष्ट होता है कि मौजूदा चीनी संकट और कीमतों में भारी बढ़ोतरी के लिए सरकार पूरी तरह जिम्मेदार है। 21 अगस्त को ही मंत्रालय ने कहा था कि मौजूदा सीजन में चीनी का उत्पादन लगभग 306लाख टन होने की उम्मीद है, जो अनुमानित 345लाख टन से काफी कम है। मंत्रालय ने जमाखोरी रोकने और घरेलू आपूर्ति बढ़ाने के लिए उठाए गए कदमों की सूची भी दी थी। हालांकि, त्योहारी सीजन से पहले स्थिति और खराब होती जा रही है। दो महीनों में चीनी की कीमतों में लगभग 40 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। चीनी उद्योग ने खुद कहा है कि चीनी की कोई वास्तविक भौतिक कमी नहीं है और कीमतों में इस भारी बढ़ोतरी के लिए सट्टेबाजी वाली खरीद और स्टॉक जमा करने को जिम्मेदार ठहराया है। इतना ही नहीं, लगभग 30 लाख टन चीनी, जो देश के कुल चीनी उत्पादन का लगभग 10 प्रतिशत है, को एथनॉल उत्पादन के लिए भेज दिया गया है। यह बिल्कुल साफ है कि मौजूदा संकट सिर्फ इसलिए नहीं है कि भारत में श्चीनी कम हैश, बल्कि यह एक गहरी पॉलिसी से जुड़ी समस्या को दिखाता है। जैसे, सरकार ने एक ही समय में गन्ने की ज्यादा तय कीमतों, एथनॉल के लिए गन्नेध चीनी के इस्तेमाल, आयात से सुरक्षा और घरेलू चीनी मार्केटिंग पर नियंत्रण जैसी नीतियां अपनाई हैं, जबकि कीमत बढ़ने का बोझ उपभोक्ता को उठाना पड़ता है। सरकार की नीति स्पष्ट रूप से उपभोक्ता–विरोधी है। पहला, क्योंकि सरकार गन्ना उगाने वालों को मिलने वाली कीमत की तो सुरक्षा करती है, लेकिन चीनी उपभोक्ता के लिए ऐसी कोई सुरक्षा नहीं है। गन्ने के लिए सरकारी फेयर एंड रेमुनरेटिव प्राइस (एफआरपी) 2016–17 में 230 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़कर 2025–26 में 355 रुपये प्रति क्विंटल हो गई है, जो लगभग 54.3 प्रतिशत की बढ़ोतरी है। गलती एफआरपी में नहीं है, क्योंकि किसानों को समर्थन देना सही है। समस्या असंतुलन में हैरू गन्ने की कीमतें प्रशासनिक रूप से ऊपर की ओर सुरक्षित रखी जाती हैं, जबकि गरीब उपभोक्ता को इसके कारण बढ़ी हुई कीमत का सामना बाजार में करना पड़ता है। दूसरा, भारत की एथनॉल नीति ने असल में पेट्रोल और खाने–पीने की चीजों के इस्तेमाल के बीच प्रतिस्पर्धा पैदा कर दी है। सरकार 20 प्रतिशत एथनॉल मिलावट का अपना मकसद पूरा करने के लिए चीनी मिलों को गन्नाध्चीनी को एथनॉल में बदलने के लिए बढ़ावा दे रही है। इस साल 30 लाख टन चीनी के बराबर मात्रा खाद्य चीनी के बजाय एथनॉल बनाने में इस्तेमाल हुई। साफ तौर पर सरकार ने एथनॉल और चीनी के उत्पादन के बीच कोई संतुलन नहीं बनाया, जिससे मौजूदा संकट में काफी योगदान मिला। सरकार ने अपनी ऊर्जा नीति के मकसद को प्राथमिकता दी और गरीब उपभोक्ता के लिए रोजाना इस्तेमाल होने वाली चीज, चीनी, को सस्ता रखने की परवाह नहीं की। तीसरा, आयात से सुरक्षा ने घरेलू कीमतों को तेजी से ठीक स्तर पर लाने को मुश्किल बना दिया है। भारत आम तौर पर चीनी पर 100 प्रतिशत आयात शुल्क लगाता है। केंद्र ने 10 लाख टन बिना आयात शुल्क वाली कच्ची चीनी (रॉ–शुगर) के आयात की इजाजत तभी दी, जब चीनी की कीमतें तेजी से बढ़कर रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गईं। सरकार ने घरेलू कीमतों को तब सुरक्षित रखा जब चीनी की कीमतें कम थींय उन्होंने आयात को तब आसान बनाया जब उपभोक्ता पहले ही कीमतों में भारी उछाल का झटका झेल चुके हैं। यह सबको अच्छी तरह से पता है कि सरकार देश के चीनी बाजार को नियंत्रित करती है। इसलिए, बाजार गड़बड़ियों के लिए सरकार जिम्मेदार है। इतना ही नहीं, सरकार उत्पादन, बिक्री, निर्यात, आयात, और यहां तक कि मिलें बाजार में कितनी चीनी जारी कर सकती हैं, इसकी मात्रा को भी विनियमित करती है। यह न्यूनतम बिक्री मूल्य का ढांचा भी बनाए रखती है। इसी माहौल में, कीमतों में भारी बढ़ोतरी का बोझ गरीब उपभोक्ताओं पर बहुत ज्यादा पड़ा है। अमीर परिवारों के लिए कीमतों में बढ़ोतरी सिर्फ एक परेशानी की बात हो सकती है, लेकिन गरीब परिवारों के लिए यह एक बड़ी समस्या है, क्योंकि चीनी का इस्तेमाल चाय, मिठाइयों और त्योहारों के खाने वगैरह में होता है। इसका असर छोटे खाने–पीने का सामान बेचने वालों पर भी पड़ता है। हालांकि भारत सरकार चीनी की कीमतों में बढ़ोतरी से होने वाली मुश्किलों को समझती है, लेकिन उसकी मुख्य चीनी सब्सिडी योजना खास तौर पर अंत्योदय अन्न योजना (एएवाई) वाले परिवारों तक ही सीमित है, जिसके तहत हर परिवार को हर महीने 1 किलो चीनी 18.50 रुपए प्रति किलो की दर से दी जाती है। इस हिस्से को छोड़कर, सरकार की नीति सभी के लिए चीनी की बाजार की कीमत बढ़ा देती है। मौजूदा संकट सिर्फ एक साल की वजह से नहीं है। चीनी का उत्पादन 2021–22 से लगातार गिर रहा है, जब देश में 359 लाख टन उत्पादन हुआ था, जबकि 2023–24 तक यह घटकर सिर्फ 320 लाख टन रह गया। मौजूदा सीजन में इसके सिर्फ 306 लाख टन रहने की उम्मीद है। केंद्र सरकार ने बढ़ते संकट को नजरअंदाज किया और समय पर सही कदम नहीं उठाए। चीनी उद्योग के संगठन ने कीमतों में मौजूदा बढ़ोतरी के लिए कुछ व्यापारियों द्वारा जमाखोरी और पहले से भंडारण करनेश को जिम्मेदार ठहराया है, जिससे बड़ी मात्रा में चीनी बाजार से हट गई और कमी का बनावटी माहौल बन गया। अब केंद्र ने चीनी डीलरों पर 30 नवंबर तक 400 टन की भंडारण सीमा लगा दी है और थोक उपभोक्ताओं के लिए 1 सितंबर से 15 दिन की खपत के बराबर भंडार रखने की सीमा तय कर दी है। 10 लाख टन कच्ची चीनी की शुल्क मुक्त आयात को मंजूरी दी गई है, और सरकार का कहना है कि अक्तूबर के मध्य तक नया उत्पादन भी शुरू होने की संभावना है, जिससे चीनी की कीमतों में राहत मिलेगी।

पिंजड़ों को तोड़ना ही

सर्वमित्रा सुरजन

22 अगस्त को राहुल गांधी ने पुणे में छात्रों की गूंज कार्यक्रम किया, जो आजाद भारत में एक ऐतिहासिक घटना के तौर पर दर्ज हो चुका है। अमूमन महिला सशक्तीकरण और महिला अधिकारों पर बड़े मंचों से बात करने के लिए आठ मार्च का इंतजार किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर घिसे–पिटे जुमलों और भाषणों की बाढ़ आ जाती है। ये 21वीं सदी है, जिसमें महिलाएं पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं, ऐसे वाक्यों से भाषणों या लेखों की शुरुआत होती है, और आगे बताया जाता है कि जीवन के तमाम क्षेत्रों में महिलाओं ने कामयाबी का परचम गाड़ा है। हालांकि इसमें एक बड़ी भूल की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता कि कामयाबी और समानता दोनों शब्दों के अर्थ अलग–अलग हैं। महिलाएं पुरुषों की तरह कई क्षेत्रों में कामयाब हो सकती हैं, लेकिन क्या उन्हें घर और बाहर हर जगह बराबरी है, इसी सवाल का जवाब समाज को देना है, जो आज तक अनुत्तरित है। अक्सर इस सवाल के जवाब में यही कहा जाता है कि महिलाओं के लिए अब कई बंधन खत्म किए गए हैं, कानून ने उन्हें ये दिया है, वो दिया है। मगर बात वही है कि महिलाओं को ये सब देने की जरूरत क्यों पड़ी। इसलिए पड़ी क्योंकि पहले जो कुछ उनके पास था, यानी समान अधिकार वो समाज ने ही छीने। और अब खुद को उदार होने का दिखावा करते हुए महिलाओं को देने का तथाकथित बड़प्पन दिखाया जा रहा है। लैंगिक समानता के इसी ढकोसले पर राहुल गांधी ने पुणे में प्रहार किया, जब उन्होंने मनुस्मृति में लिखी बातों का विरोध किया। लड़कियों से कहा कि उनका अपने पिता, पति और बेटे से रिश्ता है, लेकिन वो उनकी जागीर नहीं हैं। राहुल गांधी की इस बात का विरोध करने के लिए भाजपा के तमाम नेता अब मनुस्मृति की बाकी बातों को निकाल कर सामने ला रहे हैं कि इसमें ये अच्छी बात है, वो अच्छी बात है। जो ऐसा नहीं कर पा रहे, वो राहुल से सवाल कर रहे हैं कि आप महिला समानता की बात करते हैं तो महिला आरक्षण विधेयक पारित करने में मोदी सरकार का साथ क्यों नहीं देते। जाहिर है राहुल गांधी की एक महत्वपूर्ण पहल को केवल राजनैतिक खांचे में फिट करके उसे खराब करने की कोशिश भाजपा कर रही है। महिला आरक्षण विधेयक संसद में 2023 में कांग्रेस समेत तमाम दलों के समर्थन से पारित हो चुका है, जिसे आज तक मोदी सरकार ने लागू नहीं किया है। और मनुस्मृति की ज्यादातर बातें महिला विरोधी हैं, यह भी जगजाहिर है। असल बात यह है कि सस्ती राजनीति के लिए राहुल गांधी का विरोध किया जा रहा है, जिसमें नुकसान कांग्रेस या राहुल गांधी का नहीं समाज का हो रहा है। क्योंकि लैंगिक असमानता राजनीति से पहले समाज की समस्या है। इसका ताजा उदाहरण आभूषण बनाने वाली कंपनी जीवा के रक्षाबंधन के लिए बनाए विज्ञापन में देखने मिला। इस विज्ञापन को विवादों के बाद कंपनी ने हटा लिया है। दरअसल इसमें अभिनेत्री कृति सेनन को उनके कपड़ों के कारण ट्रोल किया जा रहा था। उन्होंने बिना बांहों वाला टॉप पहना था और इसमें उनके भाई को राखी बांधने के दौरान उनका पालतू कुत्ता भी नजर आया। इन्हीं सब पर संस्कृति के ठेकेदारों की भावनाएं आहत हो गईं। जीव मात्र पर दया और प्रेम रखने की भारतीय परंपरा चली आई है, हिंदू धर्म के कई भगवानों के वाहन पशु हैं, लेकिन अगर त्योहार से जुड़े विज्ञापन में पालतू कुत्ता नजर आया तो इसे अपमान माना गया। जहां तक अभिनेत्री के कपड़ों की बात है, तो ऐसे कपड़े टीवी धारावाहिकों और फिल्मों से लेकर आम समाज तक पहने जाते हैं। इसमें कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है। जिन्हें लड़कियों के कपड़ों में खोट नजर आता है, असल में खोट उनकी अपनी नजरों और नजरिए का होता है। लेकिन शुरु से रवायत यही चली आई है कि लड़की को ही कटघरे में खड़ा करना है, तो जाहिर तौर पर कृति सेनन का विरोध होने लगा। जिसके बाद कंपनी ने विज्ञापन हटाते हुए लिखा–हम भारतीय संस्कृति, परंपराओं और त्योहारों का बहुत सम्मान करते हैं। एक ब्रांड के तौर पर, हम हमेशा पूरे परिवार के साथ इन खुशियों भरे पलों को मनाने में विश्वास रखते हैं।

मैं शिक्षक हूँ....

मैं केवल
पाठ नहीं पढ़ाती,
मनुष्यता के अक्षर
बोती हूँ।

कभी शब्दों में समझाती हूँ,
कभी मौन से कह देती हूँकृ
"गिरना कोई पराजय नहीं,
गिरकर न उठना है।"

मेरी कक्षा में
केवल पुस्तकें नहीं खुलतीं,
किसी की संकोची आँखों में
एक स्वप्न खुलता है,
किसी की काँपती आवाज़ में
आत्मविश्वास जन्म लेता है।

कभी मेरी डाँट
तुम्हें कठोर लगी होगी,
पर उसके भीतर
तुम्हारे भविष्य की
एक अधीर–सी चिंता थी।

कभी मैं थक भी जाती हूँ३
पर तुम्हारी एक मुस्कान
मेरी सारी थकान से
बड़ी हो जाती है।

तुम्हें शायद याद न रहे
मैंने कौन–सा पाठ पढ़ाया था,
कौन–सा सूत्र समझाया था,
किस दिन कौन–सी परीक्षा ली थी३

पर मेरी इच्छा हैकृ
जीवन की किसी कठिन घड़ी में
जब संसार तुम्हें कहे
"तुम नहीं कर सकते,"
तब मेरे शब्द
तुम्हारे भीतर से उठेंकृ

"नहीं
मेरी शिक्षक ने
मुझ पर विश्वास किया था।"

शायद यही
मेरे होने का अर्थ है।

मैं तुम्हारी राह नहीं बन सकती,
पर अँधेरे में
एक दीप अवश्य रख सकती हूँ।

मैं तुम्हारे पंख नहीं बन सकती,
पर उड़ने का
साहस दे सकती हूँ।

और जिस दिन
तुम मुझसे बहुत आगे निकल जाओगे,
शायद मैं पीछे खड़ी
चुपचाप मुस्कराऊँगी३

क्योंकि शिक्षक का गौरव
इसमें नहीं कि
उसके शिष्य उसके पीछे चलेंकृ

गौरव तो उस दिन है
जब शिष्य उससे आगे बढ़ जाए
और फिर भी
अपने भीतर
अपने शिक्षक की
एक छोटी–सी लौ बचाए रखे।

तुम्हारी हर उपलब्धि में
मेरा थोड़ा–सा स्वप्न होगा,
तुम्हारी हर उड़ान में
मेरी कोई अधूरी प्रार्थना।

इसलिए
आज ज्मंबीमते' क्ंल पर
मुझे पुष्प नहीं चाहिए,
न कोई औपचारिक सम्मान३

बस जीवन में कभी
अपने भीतर झाँकना
और यदि वहाँ
मेरा कोई शब्द जीवित मिलेकृ

तो समझना,
मैंने तुम्हें
सिर्फ़ पढ़ाया नहीं था३
मैंने तुम्हें
पूरे मन से
जिया था।

प्रेरणा तलवार

आदिवासी छात्रों के हित में सही फैसला

जनप्रतिनिधि जब जनता के हितों को प्राथमिकता देते हुए उनके हक की आवाज उठाएं, जब सशक्त विपक्ष अपनी जिम्मेदारी निभाए और इंसाफ की लड़ाई में जनता के साथ खड़ा रहे तो हालात किस तरह बदलने शुरु होते हैं, इसके दो उदाहरण हाल ही में सामने आए हैं। एक झारखंड से और दूसरा महाराष्ट्र से। संयोग से दोनों जगह राहुल गांधी ही सरकारों के बरक्स जनता के साथ खड़े दिखे। झारखंड में कांग्रेस सत्ता में झारखंड मुक्ति मोर्चा के साथ है, बावजूद इसके जब वहां पेपर लीक और भर्ती में गड़बड़ियों के खिलाफ 24 दिनों लंबा छात्र आंदोलन चला तो राहुल गांधी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को चिट्ठी लिखकर आंदोलनकारियों की मांगों पर ध्यान देने कहा, जिसके बाद आंदोलन खत्म हुआ। अब ऐसी ही एक चिट्ठी राहुल गांधी ने महाराष्ट्र में भाजपानीत सरकार के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस को लिखी। जिसमें आदिवासी छात्रावासों के लिए बने नियमों पर छात्रों की आपत्ति पर राहुल गांधी ने ध्यान दिलाया। इस का नतीजा भी सकारात्मक ही रहा। देवेन्द्र फड़नवीस की सरकार ने छात्रावासों के लिए बनाए संशोधित नियमों को वापस ले लिया है। दरअसल महाराष्ट्र सरकार ने 5 अगस्त को आदिवासी छात्रावासों के लिए नए नियम लागू किए थे। इसमें छात्रावास में रहने के लिए अधिकतम उम्र 26 साल तय की गई। बाद में 14 अगस्त को सरकार ने नियम बदलकर उम्र सीमा 26 से बढ़ाकर 30 साल कर दी थी। इसके बाद छात्रों का विरोध शुरू हुआ। पुणे के मांजरी स्थित आदिवासी छात्रावास में आदिवासी छात्रों का आंदोलन 13 अगस्त से शुरू हुआ था। इस आंदोलन में बड़ी संख्या में छात्र शामिल हुए। पहले छात्रों ने धरना शुरू किया और बाद में कुछ छात्र अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर बैठ गए। जिसमें कुछ छात्रों की तबीयत बिगड़ने की भी जानकारी सामने आई थी। छात्रों की मुख्य मांगों में 30 साल की उम्र सीमा खत्म करना, छात्रावास की सुविधाओं में सुधार और आदिवासी छात्रों से जुड़े पुराने मुद्दों का समाधान शामिल था। छात्रों का कहना था कि 30 साल की सीमा उन आदिवासी छात्रों को छात्रावास से बाहर कर देगी, जो देर से पढ़ाई शुरू करते हैं या 30 साल के बाद उच्च शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। एक बड़ा सवाल आदिवासी बहुल इलाके गढ़चिरौली के आदिवासी छात्रावास से सामने आया, जहां की छात्राओं ने आरोप लगाया था कि लंबी छुट्टी से लौटने पर उन्हें गर्भवती होने की जांच कराने के लिए मजबूर किया जाता था। पुणे में 22 अगस्त को राहुल गांधी के छात्रों की गूंज कार्यक्रम में भी एक छात्रा ने ऐसे सवालों को उठाया था। छात्रा के मुताबिक, जब उन्होंने प्रशासन से इसकी वजह पूछी तो जवाब दिया गया कि इतने दिन बाहर रहने के दौरान कहीं उन्हें कोई जानलेवा बीमारी तो नहीं हो गई। श्छात्रों की गूंजश के दौरान छात्राओं ने बताया कि छात्रावासों में 30 वर्ष की अनावश्यक उम्र सीमा, अपमानजनक नियम, असुरक्षित सुविधाएं और महिलाओं के लिए गर्भावस्था जांच जैसे अमानवीय प्रावधान लागू हैं। इसके बाद ही राहुल गांधी ने देवेन्द्र फड़नवीस को पत्र लिखा था। जिसमें उन्होंने आदिवासी छात्रों के छात्रावासों और आश्रम शालाओं की बदहाली पर गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि छात्र कई दिनों से भूख हड़ताल पर हैं, छात्रावास में खाने की गुणवत्ता खराब है और सफाई व सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम नहीं हैं। राहुल गांधी ने गढ़चिरौली की एक आश्रमशाला का भी जिक्र किया, जहां कुछ दिन पहले सांप के काटने से तीन बच्चियों की मौत हुई थी। राहुल ने दावा किया कि राज्य में 28 आदिवासी छात्र सांप के काटने की घटनाओं में जान गंवा चुके हैं। उन्होंने सरकार से सवाल किया कि क्या आदिवासी छात्रों को हॉस्टल और आश्रम शालाओं में सांप–बिच्छुओं से भी सुरक्षा नहीं दी जा सकती। राहुल गांधी ने अपनी चिट्ठी में यह भी आरोप लगाया कि 30 साल से कम उम्र के आदिवासी छात्रों को छात्रावासों में प्रवेश नहीं दिया जा रहा है। इसके अलावा उन्होंने दावा किया कि लंबी छुट्टी के बाद लौटने वाली छात्राओं का प्रेग्नेंसी टेस्ट कराया जाता है। राहुल ने इसे आदिवासी छात्राओं के साथ अन्याय बताते हुए सरकार से कार्रवाई की मांग की। राहुल गांधी ने लिखा था कि सुदूर गांवों–कस्बों से आने वाले ये छात्र कोई दान नहीं, अपना अधिकार मांग रहे हैं। अपेक्षा है कि आप उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलकर उनकी समस्याओं का तत्काल समाधान करेंगे। हालांकि इस चिट्ठी पर राहुल गांधी के आरोपों पर महाराष्ट्र सरकार में आदिवासी विकास मंत्री अशोक उइके ने पलटवार करते हुए राहुल गांधी पर बिना पूरी जानकारी के मुद्दा उठाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी पहले होमवर्क नहीं करते और बाद में झूठ का मंच सजाते हैं। श्री उइके ने कहा कि पुणे में राहुल गांधी का कार्यक्रम होने से पहले ही आदिवासी छात्रों का आंदोलन खत्म हो चुका था और सरकार उनकी समस्याओं का समाधान कर चुकी थी। वहीं प्रेग्नेंसी टेस्ट के आरोप को भी मंत्री ने पूरी तरह गलत बताया। उन्होंने कहा कि लंबे समय तक छुट्टी पर रहने वाली छात्राओं का मेडिकल परीक्षण किया जाता है, लेकिन इसमें प्रेग्नेंसी टेस्ट नहीं किया जाता। लेकिन मंत्री महोदय के तमाम दावे के बाद अब महाराष्ट्र सरकार ने आदिवासी छात्रावास में रहने के लिए 30 साल की उम्र सीमा खत्म कर दी है।

अशोक उईके ने बताया कि देवेंद्र फडणवीस की मंजूरी के बाद 14 अगस्त का सरकारी प्रस्ताव और उससे जुड़े संशोधित नियम वापस ले लिए गए हैं। सरकार ने अपने ही बनाए नियमों को अगर जनहित देखते हुए वापस लिया है, तो इसमें कोई बुराई नहीं है, बल्कि यह अच्छी बात है कि समय रहते आदिवासी छात्रों की पीड़ा को सुना और समझा गया। हालांकि मूल सवाल अब भी बना हुआ है कि देश में शिक्षा व्यवस्था कब दुरुस्त होगी। सरकार आदिवासियों को मुख्यधारा का हिस्सा बनाने और उनके विकास के लिए दावे तो ढेर सारे करती है, लेकिन अगर नयी पीढ़ी के आदिवासी शिक्षा के लिए अब भी संघर्ष करेंगे तो किस तरह देश का सर्वांगीण विकास होगा।

कियारा बोलीं– सलमान से खास कनेक्शन काम नहीं आया

आज कियारा आडवाणी बॉलीवुड की सबसे सफल अभिनेत्रियों में गिनी जाती हैं। बड़े बैनर, करोड़ों की फिल्में और देशभर में करोड़ों प्रशंसक उनके नाम हैं। हालांकि, फिल्म इंडस्ट्री में सलमान खान से खास कनेक्शन होने के बावजूद उनके लिए सफलता की राह आसान नहीं रही। पहली ही फिल्म फ्लॉप हो गई, महीनों तक काम नहीं मिला, श्एमएस धोनीरू द अनटोल्ड स्टोरीश जैसी सुपरहिट फिल्म के बाद भी उन्हें ऑडिशन देने पड़े और कई बार रिजेक्शन झेलना पड़ा। यही वजह है कि आज भी कई लोग श्कबीर सिंहश को उनकी पहली फिल्म समझते हैं। फैशन इंडस्ट्री में भी उन्हें गंभीरता से नहीं लिया गया। आज की सक्सेस स्टोरी में जानिए कियारा आडवाणी की निजी जिंदगी और करियर से जुड़ी कुछ खास बातें। पापा बिजनेसमैन थे, मां टीचरय लेकिन बचपन से सपना था– एक्ट्रेस बनना 31 जुलाई 1992 को मुंबई में जन्मीं कियारा आडवाणी का असली नाम आलिया आडवाणी है। उनके पिता जगदीप आडवाणी बिजनेसमैन हैं, जबकि मां जेनेवीव जाफरी टीचर रह चुकी हैं। जेनेवीव जाफरी अभिनेता सईद जाफरी के भाई हमीद जाफरी और उनकी पहली पत्नी वैलेरी की बेटी हैं। बाद में हमीद जाफरी ने अशोक कुमार की बेटी भारती गांगुली से शादी की थी।कियारा का परिवार फिल्मी दुनिया से सीधे तौर पर जुड़ा नहीं था, लेकिन बॉलीवुड से परिचय बचपन से था। कियारा ने बताया है कि वह बचपन में आईने के सामने फिल्मों के सीन दोहराती थीं और स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेती थीं। तभी उन्होंने फिल्मों में काम करने का सपना देखा। उन्होंने कैथेड्रल एंड जॉन कॉनन स्कूल से पढ़ाई और जय हिंद कॉलेज से मास कम्युनिकेशन में ग्रेजुएशन किया। 10वीं बोर्ड परीक्षा में उनके 92: अंक आए थे। फिल्मों में आने से पहले बच्चों को पढ़ाती थींफिल्मों में आने से पहले कियारा अपनी मां के प्री–स्कूल में छोटे बच्चों को पढ़ाती थीं। थ्सउ ब्उचंदपवद को दिए इंटरव्यू में उन्होंने बताया था कि उन्हें बच्चों के साथ समय बिताना पसंद था। कुछ समय यह काम करने के बाद उन्होंने फिल्मों में आने के लिए ऑडिशन देना शुरू कर दिया।आलिया से कियारा बनने के पीछे की कहानी कियारा का असली नाम आलिया था। बॉलीवुड में कदम रखने की तैयारी के दौरान आलिया भट्ट पहले से स्थापित थीं, इसलिए सलमान खान ने उन्हें नाम बदलने की सलाह दी। कियारा ने 'कॉमेडी नाइट्स विद कपिल' में बताया था कि फिल्म श्अंजाना अंजानीश में प्रियंका चोपड़ा के किरदार श्कियाराश से प्रेरित होकर उन्होंने नया नाम चुना। सलमान खान से खास कनेक्शन ने नहीं दिलाया काम अक्सर माना जाता है कि सलमान खान के परिवार से रिश्तों की वजह से कियारा को फिल्मों में आसानी से एंट्री मिली, लेकिन असलियत अलग है। दोनों परिवारों के पुराने संबंध हैं, जिसे सलमान और कियारा स्वीकार कर चुके हैं। कियारा ने राज शमानी के पॉडकास्ट में कहा था कि उन्हें कभी सिर्फ पहचान की वजह से काम नहीं मिला। हर फिल्म के लिए ऑडिशन देना पड़ा।दरअसल, कियारा की मां जेनेवीव जाफरी और सलमान खान बचपन के दोस्त रहे हैं। दोनों परिवारों के बीच लंबे समय से अच्छे संबंध हैं। कियारा की मौसी शाहीन जाफरी भी एक समय सलमान खान की करीबी दोस्त और कथित गर्लफ्रेंड रह चुकी हैं। यही वजह है कि सलमान, कियारा को बचपन से जानते हैं। पहली फिल्म आई और सपना टूटता हुआ नजर आया 2014 में कबीर सदानंद की फिल्म श्फगलीश से कियारा ने बॉलीवुड में डेब्यू किया। फिल्म में मोहित मारवाह, विजय राज और जिमी शेरगिल भी थे। रिलीज से पहले फिल्म से काफी उम्मीदें थीं, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर यह बुरी तरह फ्लॉप रही। पहली फिल्म की असफलता का सबसे बड़ा असर कियारा के करियर पर पड़ा। जहां कई नए कलाकारों को पहली फिल्म के बाद ऑफर मिलने लगते हैं, वहीं कियारा का फोन बजना बंद हो गया। महीनों तक नहीं मिला कोई काम, खुद पर होने लगा था शक श्फगलीश फ्लॉप होने के बाद कियारा का सबसे कठिन दौर शुरू हुआ। उन्होंने थ्सउ ब्उचंदपवद को दिए इंटरव्यू में बताया कि कई महीनों तक उनके पास कोई नई फिल्म नहीं थी। वह रोज मैनेजर से पूछती थीं कि कोई कॉल आया या नहीं। हर दिन उम्मीद रहती थी कि शायद कोई डायरेक्टर या प्रोड्यूसर फोन करेगा, लेकिन जवाब श्नहींश होता था। धीरे–धीरे उन्हें खुद पर शक होने लगा। क्या उन्होंने गलत करियर चुन लिया? क्या पहली फिल्म ही आखिरी फिल्म बन जाएगी? क्या अब कोई उन्हें मौका देगा? ये सवाल लगातार मन में चलते रहते थे। लेकिन उन्होंने ऑडिशन देना नहीं छोड़ा। एक ऑडिशन ने बदल दी जिंदगी करीब दो साल के संघर्ष के बाद कियारा को नीरज पांडे की फिल्म श्एमएस धोनीरू द अनटोल्ड स्टोरीश के लिए ऑडिशन का मौका मिला। इसमें उन्हें साक्षी धोनी का किरदार निभाना था। कियारा कहती हैं कि इस रोल के लिए भी कई राउंड के ऑडिशन और लुक टेस्ट देने पड़े। आखिरी समय तक उन्हें भरोसा नहीं था कि फिल्म मिलेगी या नहीं। रोल मिलने पर उन्हें लगा कि अब उनकी जिंदगी बदल जाएगी। श्एमएस धोनीश ब्लॉकबस्टर हुई, लेकिन कियारा के लिए कुछ नहीं बदला 30 सितंबर 2016 को रिलीज हुई श्एमएस धोनीरू द अनटोल्ड स्टोरीश उस साल की सबसे बड़ी हिट फिल्मों में शामिल रही। फिल्म में सुशांत सिंह राजपूत ने महेंद्र सिंह धोनी और कियारा आडवाणी ने साक्षी धोनी का किरदार निभाया। फिल्म की सफलता के बाद लोगों को लगा कि उनका संघर्ष खत्म हो गया, लेकिन ऐसा नहीं था। कियारा ने बताया कि फिल्म हिट होने के बावजूद उन्हें पहले की तरह ऑडिशन देने पड़ते थे और कई बार स्क्रीन टेस्ट के बाद भी रोल नहीं मिलता था। उन्होंने कहा था, ष्लोगों को सिर्फ आपकी रिलीज हुई फिल्में दिखती हैं, लेकिन उनके पीछे कितने ऑडिशन और कितने रिजेक्शन होते हैं, यह कोई नहीं देखता।ष कई फिल्मों के लिए दिया ऑडिशन, लेकिन हर बार नहीं मिली मंजिल कियारा कहती हैं कि उस दौर में वह लगभग हर बड़े प्रोडक्शन हाउस के लिए ऑडिशन दे रही थीं। कई बार आखिरी राउंड, लुक टेस्ट और कॉस्ट्यूम ट्रायल तक पहुंचने के बाद भी रोल किसी और अभिनेत्री को मिल जाता। हर रिजेक्शन के बाद वह सोचती थीं कि कमी कहां रह गई। हालांकि उन्होंने तय कर लिया था कि रिजेक्शन को अपनी पहचान नहीं बनने देंगी। जब बड़े फैशन डिजाइनर्स ने कहा– अभी आप स्टार नहीं हैं आज कियारा बड़े फैशन ब्रांड्स का चेहरा हैं, लेकिन शुरुआती दिनों में उन्हें रेड कार्पेट के लिए कपड़े तक नहीं मिलते थे। स्पससल पदही के पॉडकास्ट में उन्होंने बताया था कि कई बड़े डिजाइनर्स आउटफिट देने से मना कर देते थे, क्योंकि वह बड़ी स्टार नहीं थीं। कई इवेंट्स में उन्हें छोटे डिजाइनर्स के कपड़े पहनने पड़ते थे। उन्होंने कहा कि यह बात चुभती थी, लेकिन इसे कमजोरी नहीं बनने दिया। उनके मुताबिक, ष्अगर आपका काम अच्छा होगा तो एक दिन वही लोग आपके साथ काम करना चाहेंगे।ष आज देश के लगभग सभी बड़े फैशन डिजाइनर्स और लग्जरी ब्रांड्स उनके साथ काम करते हैं। आलोचनाएं भी मिलीं और एक्टिंग पर भी उठे सवाल शुरुआती फिल्मों के बाद कुछ समीक्षकों का मानना था कि कियारा की स्क्रीन प्रेजेंस अच्छी है, लेकिन अभिनय में सुधार की जरूरत है। सोशल मीडिया पर भी उन्हें कई बार ट्रोल किया गया। उन्होंने आलोचनाओं से भागने के बजाय हर फिल्म के बाद अपना काम देखा और सुधार किया। उन्होंने एक्टिंग वर्कशॉप्स कीं तथा डायलॉग डिलीवरी और इमोशनल सीन पर खास मेहनत की। यही मेहनत बाद की फिल्मों में साफ नजर आई। श्लस्ट स्टोरीजश ने बदल दी लोगों की सोच 2018 में नेटफ्लिक्स की एंथोलॉजी फिल्म श्लस्ट स्टोरीजश रिलीज हुई। करण जौहर के निर्देशन वाली इस कहानी में कियारा का किरदार छोटा, लेकिन चुनौतीपूर्ण था। फिल्म रिलीज होते ही उनके अभिनय की खूब चर्चा हुई। पहली बार समीक्षकों ने उन्हें सिर्फ खूबसूरत चेहरा नहीं, बल्कि अच्छी अभिनेत्री भी माना। कई फिल्म समीक्षकों के अनुसार, इसी फिल्म ने कियारा को लेकर इंडस्ट्री का नजरिया बदल दिया। फिर आई श्कबीर सिंहश और रातोंरात बदल गई जिंदगी 2019 में शाहिद कपूर के साथ रिलीज हुई।

कृति सैनन विज्ञापन, जीवा ने हटाया राखी वाला विवादित ऐड, कंपनी ने फैसले की बताई ये वजह, कपड़ों को लेकर ट्रोल हुई थीं एक्ट्रेस

आभूषण बनाने वाले ब्रांड जीवा ने बुधवार को कहा कि उसने रक्षाबंधन के लिए अभिनेत्री कृति सैनन को लेकर बनाया गया अपना विज्ञापन हटा दिया है। विज्ञापन में अभिनेत्री द्वारा पहने गए कपड़ों पर सोशल मीडिया पर लोगों ने आपत्ति जतायी थी। ब्रांड ने अपने सोशल मीडिया खातों पर जारी एक बयान में कहा कि उसका उद्देश्य समाज के किसी भी वर्ग की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं था, इसलिए उसने विज्ञापन वापस ले लिया है। जीवा ने कहा, हम भारतीय संस्कृति, परंपराओं और त्योहारों का बहुत सम्मान करते हैं। एक ब्रांड के तौर पर हम हमेशा पूरे परिवार के साथ इन खुशी के अवसरों को मनाने में विश्वास करते रहे हैं। इस बार हम इस प्यार और उत्सव में अपने पालतू जानवरों को भी शामिल करना चाहते थे। उसने कहा, अगर हमारे हालिया विज्ञापन से अनजाने में समाज के किसी वर्ग की भावनाओं को ठेस पहुंची है, तो हमारा ऐसा कोई इरादा बिल्कुल नहीं था। सम्मान के तौर पर हमने उस विज्ञापन को सभी मीडिया माध्यमों से हटा लिया है। इस त्योहारी मौसम में आप सभी के जीवन में प्रेम और सकारात्मकता बनी रहे। विज्ञापन में फिल्म कॉकटेल 2 की अभिनेत्री कृति सैनन इंडो–वेस्टर्न पोशाक में नजर आई थीं। उन्होंने ब्रालेट और स्कर्ट के साथ केप पहन रखा था और अपने भाई तथा पालतू कुत्ते को राखी बांधती दिखाई दी थीं। विज्ञापन सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर विवाद खड़ा हो गया। कई लोगों ने पारंपरिक त्योहार के दौरान अभिनेत्री के पहनावे की आलोचना की, जबकि कुछ लोगों ने कुत्ते को राखी बांधने पर भी आपत्ति जताई। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सांसद कंगना रनौत ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट में कृति की पोशाक को जानबूझकर असहज करने वाला बताया। अपने बेबाक बयानों के लिए पहचाने जाने वाली रनौत ने कहा, महिला होने के लिए यह शानदार समय है। हमारी अलमारियां तरह–तरह के कपड़ों से भरी हैं। आज की महिला ग्लोबल महिला है–कॉकटेल ड्रेस से लेकर लहंगा–चोली, जींस से साड़ी और बिकिनी से सलवार–कमीज तक। रनौत ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी में लिखा, आज हमारे पास कपड़ों के इतने विकल्प हैं, फिर आप अपनी बिकिनी,अंतर्वस्त्र में अपने भाई को राखी क्यों बांधोगी? आपके पास स्टाइल के सारे विकल्प कहां हैं? हा हा, यह विज्ञापन जानबूझकर असहज करने वाला लगता है। कृति सैनन ने काफी समय तक चुप्पी साधे रहने के बाद दोपहर में इंस्टाग्राम पर जवाबी पोस्ट किया। उन्होंने कहा, संस्कृति और परंपराएं दिल में होती हैं, नेकलाइन में नहीं!.. साथ ही, महिलाओं को यह बताना हम कब बंद करेंगे कि उन्हें क्या पहनना चाहिए? समय के साथ पारंपरिक पहनावे और फैशन में काफी बदलाव आया है। लेकिन अब भी किसी महिला के अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान को सिर्फ उसके कपड़ों से मापा जाता है। अपने बयान में सैनन ने कहा कि त्योहारों की असली भावना व्यक्ति के पहनावे में नहीं, बल्कि उन परंपराओं के प्रति उसके मन में मौजूद भावनाओं और उनके महत्व में होती है। सैनन ने कुत्ते को राखी बांधने पर आपत्ति जताने वालों को जवाब देते हुए कहा, श्श्रक्षाबंधन एक–दूसरे की रक्षा के संकल्प का प्रतीक है। मैं और मेरी बहन एक–दूसरे को राखी बांधते हैं। हम जानते हैं कि हम एक–दूसरे की उतनी ही रक्षा कर सकते हैं, जितनी एक भाई कर सकता है। हम एक–दूसरे के अच्छे स्वास्थ्य, खुशियों और लंबी उम्र की प्रार्थना करते हैं। और हमारे लिए यह प्रार्थना और वादा हमारे कुत्तों के लिए भी एक समान ही है। आखिरकार, वे भी हमारे परिवार का हिस्सा हैं।

एक्ट्रेस प्रियंका चोपड़ा अपनी अपकमिंग भारतीय फिल्म वाराणसी की शूटिंग के लिए मुंबई पहुंची हैं। भारत आते ही प्रियंका मुंबई स्थित प्रसिद्ध सिद्धिविनायक मंदिर में दर्शन करने पहुंचीं। प्रियंका मंदिर परिसर के बाहर बिना चप्पल के नंगे पैर चलती नजर आईं, जबकि उनके साथ चल रहे शख्स के पैरों में चप्पल दिखी। प्रियंका ने हाथ हिलाकर फैंस का अभिवादन किया और फिर अपनी कार में बैठकर रवाना हो गईं। राजामौली की वाराणसी से कमबैक कर रही हैं प्रियंकाप्रियंका चोपड़ा काफी समय बाद किसी भारतीय फिल्म में काम करने जा रही हैं। वे निर्देशक एसएस राजामौली की अपकमिंग फिल्म वाराणसी में नजर आएंगी। इस फिल्म में उनके साथ साउथ स्टार महेश बाबू और पृथ्वीराज सुकुमारन मुख्य भूमिकाओं में हैं। मुंबई के बाद प्रियंका वाराणसी की शूटिंग के लिए हैदराबाद रवाना होंगी। यह फिल्म 7 अप्रैल 2027 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। फिल्म में निशानेबाज मंदाकिनी का रोल फिल्म वाराणसी की कहानी की बात करें तो महेश बाबू इसमें रुद्र नाम के किरदार में नजर आएंगे, जो एक प्राचीन खगोलीय कलाकृति से जुड़े मिशन पर निकलता है। प्रियंका चोपड़ा फिल्म में मंदाकिनी का किरदार निभा रही हैं, जो एक इतिहासकार और कुशल निशानेबाज है। फिल्म में मंदाकिनी मुख्य किरदार रुद्र का साथ देती है।

एक्ट्रेस अमृता खानविलकर इन दिनों अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर सोशल मीडिया पर चर्चा में हैं. हाल ही में खबरें हैं आई थीं कि उनका और उनके पति हिमांशु मल्होत्रा का तलाक हो रहा है. इसी बीच अब एक्ट्रेस ने रिश्ते को लेकर सामने आ रही खबरों पर रिएक्ट किया है और लीगल नोटिस शेयर कर चेतावनी दी है. तलाक की खबरों पर अमृता खानविलकर ने किया रिएक्ट अमृता के वकीलों ने सख्त नोटिस जारी करते हुए साफ कहा है कि बिना कंफर्मेशन के दावे करना या उनकी प्राइवेसी में दखल देना कानूनी कार्रवाई का कारण बन सकता है. 10 अगस्त 2026 को अमृता खानविलकर की लीगल टीम ने इन खबरों पर कड़ा बयान जारी किया. उन्होंने कहा, श्हमें पता चला है कि कुछ ऑनलाइन, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर अमृता खानविलकर और उनकी पर्सनल लाइफ को लेकर ऐसी बातें शेयर की जा रही हैं, जो झूठी, बदनाम करने वाली और उनकी प्राइवेसी में दखल देने वाली हैं. लीगल टीम ने आगे कहा कि हर किसी को अपनी बात रखने की आजादी है, लेकिन इस आजादी का गलत इस्तेमाल करके अमृता के बारे में अफवाहें, बिना पुष्टि वाली बातें या गलत जानकारी फैलाना बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. उन्होंने साफ कहा कि ऐसी किसी भी जानकारी को गंभीरता से लिया जाएगा और जरूरत पड़ने पर कानूनी कार्रवाई भी की जा सकती है. बयान में ये भी साफ चेतावनी दी गई है कि ऐसी खबरें फैलाने वालों पर कानूनी कार्रवाई हो सकती है. इसमें कहा गया, श्अगर हमारे पास इसके सबूत मिलते हैं, तो ऐसी बातें बनाने, पब्लिश करने या शेयर करने वाले लोगों, संस्थाओं या संगठनों के खिलाफ कानून के मुताबिक कानूनी कार्रवाई की जाएगी.श अमृता की टीम ने आगे कहा, श्ऐसे सभी मामलों पर नजर रखी जा रही है और उन्हें रिकॉर्ड किया जा रहा है, ताकि सही कानूनी कदम उठाए जा सकें।

खाने से आ रही है जले हुए की महक ? ये 5 टिप्स तुरंत दूर करेंगी आपकी परेशानी

❍ खाना हल्का सा जल गया है या फिर मसाला भूनते समय जल गया है, तो पूरा खाना फेंकने की जरूरत नहीं है। ये आसान कुकिंग टिप्स अपनाकर आप खाने के टेस्ट को एकदम ठीक कर सकती हैं।

खाना बनाते हुए थोड़ी सी चूक हुई नहीं कि सारा स्वाद बिगड़ जाता है। कई बार पूरी सावधानी के बाद भी हल्का सा ध्यान खाने से हटता है और खाना तुरंत हल्का जल जाता है। अब ऐसी स्थिति में खाना पूरी तरह नहीं जलता लेकिन हां उसमें जले हुए कि खुशबू जरूर आ जाती है। आप कितना भी जला हुआ खाना अलग कर लें, थोड़ी बहुत खुशबू आना तय है। ज्यादातर तो मसाले भूनते हुए जल जाते हैं, जिससे खाने का पूरा टेस्ट बिगड़ जाता है। अब अगर आपके साथ इनमें से कोई स्थिति हो गई है, तो भला क्या किया जाए? आइए जानते हैं कुछ कुकिंग टिप्स जो खाने से जले हुई की खुशबू दूर करने में मदद करेंगी।

खाने से नहीं आएगी जलने की महक

1 अगर खाना पकाते वक्त हल्का–सा जल गया है, तो जले हुए हिस्से को खुरचने की गलती कभी नहीं करें। ऐसा करने से पूरे खाने से जलने की बहुत तेज बदबू आने लगती है। पैन को खुरचे बिना सारी सामग्री को दूसरे बर्तन में डाल दें और फिर उसे पकाएं।

2 अगर मसाला बहुत अधिक सूखा है, तो ऐसे में उसके पैन के तल में चिपकने और जलने की आशंका बढ़ जाती है। मसाला भूनते वक्त न जले, इसके लिए पैन में एक से दो चम्मच पानी डालें और फिर उसे मिक्स करते हुए मसाले को भूनें।

3 अगर मसाला भूनते वक्त जल गया है, तो भुने हुए मसाले में थोड़ा दूध या क्रीम मिला दें। जले मसाले की महक गायब हो जाएगी। अपने व्यंजन में दूध या क्रीम मिलाते वक्त आंच धीमी रखें वर्ना दूध या क्रीम के फटने की आशंका काफी बढ़ जाती है।

4 सब्जी के मसाले से जली हुई महक को दूर करने और उसे खट्टा स्वाद देने के लिए डिश में दही मिलाएं। यह न केवल जलने की महक को दूर करता है, बल्कि अगर सब्जी अधिक तीखी हो जाती है तो यह उस तीखेपन को भी कम करता है।

5 जले हुए भोजन के मामले में आलू भी बहुत काम आता है। आलू किसी व्यंजन के स्वाद और महक को सोखने के लिए जाना जाता है। जले हुए खाने को दूसरे बर्तन में डालें। आलू के कुछ टुकड़े काटकर उसमें डालें और धीमी आंच पर कुछ देर पकाएं। आलू को निकाल दें। महक गायब हो जाएगी।

बच्चों के लिए कितनी और क्यों जरूरी है पॉकेट मनी ? जानिए किस उम्र से होनी चाहिए शुरुआत

हम उस पीढ़ी से हैं, जो परवरिश के पुराने तरीकों को पीछे छोड़ अपने बच्चों को बड़ा करने के क्रम में नए प्रयोग करने लगे हैं। परवरिश का एक अहम हिस्सा है अपने बच्चों को पैसों के बारे में जरूरी सीख देना। इसीलिए अब हर माह बच्चों को पॉकेट मनी मिलना आम बात हो गई है। यह सिर्फ एक परंपरा नहीं, बल्कि बच्चे की परवरिश और आर्थिक साक्षरता को बढ़ाने का एक जरिया बन चुका है। बस जरूरत है पॉकेट मनी के लिए सही उम्र को भांपकर उसकी सीमाओं को तय करने की। इस ओर भी ध्यान देने की जरूरत है कि मनी मैनेजमेंट सिखाने के लिए आप बच्चे को जो आजादी दे रही हैं, कहीं वह जाने–अनजाने में आपकी गलती तो साबित नहीं हो रही।

क्यों है जरूरी पॉकेट मनी?

सबसे पहला सवाल उठता है कि भला बच्चों के हाथों में पैसे देने ही क्यों हैं? जवाब एकदम साफ है, किसी भी काम को सीखने के लिए उसे करना जरूरी है। यह बात पॉकेट मनी के मामले में भी लागू होती है। जब तक बच्चा पैसे के महत्व, उसे खर्च करने और जोड़ने के लिए खुद से प्रयास नहीं करेगा, तब तक वह सही मायने में पैसे की अहमियत समझ नहीं सकेगा। इस बाबत मनोचिकित्सक डॉ. उन्नति कुमार कहते हैं, 'पॉकेट मनी बच्चों को पैसे की अहमियत, बजट बनाना, बचत और जिम्मेदारी से पैसे खर्च करना सिखाती है।' इस बात से आज के माता–पिता भी इत्तेफाक रखते हैं। एक शोध में पाया गया कि 95 फीसदी माता–पिता मानते हैं कि बच्चों को पैसे का प्रबंधन सिखाना बहुत जरूरी है।

किस उम्र से हो शुरुआत

आमतौर पर भारतीय माता–पिता किशोरावस्था या कॉलेज पहुंचने के बाद ही बच्चे को नियमित रूप से पॉकेट मनी देना शुरू करते हैं। उनका मानना होता है कि इस उम्र तक बच्चा पैसे का समझदारी से प्रयोग करना जान जाता है। बच्चे को पॉकेट मनी किस उम्र से देना है, यह पूरी तरह से अभिभावक के विवेक पर निर्भर करता है। आप चाहें तो बच्चे को पॉकेट मनी देने की शुरुआत आठ से नौ साल की उम्र में कर सकती हैं। उनके लिए इस उम्र में पैसों की कीमत को समझना, वित्तीय साक्षरता को विकसित करना आसान हो सकता है।

बारिश के मौसम में बेहद टेस्टी लगता है पपीते का हलवा, बदलते मौसम में सेहत का ख्याल रखती है रेसिपी

❍ आज जो रेसिपी आपके साथ शेयर करने वाले हैं, वो कुछ अलग, टेस्टी और हेल्दी भी है। जी हां हम बात कर रहे हैं पपीते के हलवे की। पपीते का हलवा ना सिर्फ खाने में बेहद टेस्टी और हेल्दी है बल्कि इसे बनाना भी बेहद आसान है।

बारिश का मौसम आते ही ना सिर्फ चाय के साथ गर्मा–गर्म पकौड़ों की बल्कि कुछ मीठा खाने की भी क्रेविंग तेज हो जाती है। मीठा का नाम सुनते ही सबसे पहला ख्याल हलवे का ही आता है। आपने गाजर और सूजी का हलवा तो खूब और कई बार खाया होगा, लेकिन आज जो रेसिपी आपके साथ शेयर करने वाले हैं, वो कुछ अलग, टेस्टी और हेल्दी भी है। जी हां हम बात कर रहे हैं पपीते के हलवे की। पपीते का हलवा ना सिर्फ खाने में बेहद टेस्टी और हेल्दी है बल्कि इसे बनाना भी बेहद आसान है। फाइबर और विटामिन से भरपूर इस हलवे का स्वाद एक बार चखने वाला इसे लंबे समय तक याद रखता है। तो आइए बिना देर किए जान लेते हैं कैसे बनाया जाता है टेस्टी पपीते का हलवा।

पपीते का हलवा बनाने के लिए सामग्री

–1 पका हुआ पपीता
–1/2 लीटर दूध
–2 बड़े चम्मच घी
–1/2 कप चीनी या गुड़
–1/4 छोटा चम्मच इलायची पाउडर
–1 बड़ा चम्मच मेवे

पपीते का हलवा बनाने का तरीका

पपीते का हलवा बनाने के लिए सबसे पहले पके हुए पपीते को बड़े–बड़े टुकड़ों में काटकर उनके छिलके उतार लें। अब पपीते को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकरर एक बड़े बर्तन में रख दें। अब एक कड़ाही में घी डालकर धीमी आंच पर गर्म करें। जब घी गर्म हो जाए तो उसमें पपीते के टुकड़े डालकर 5 मिनट तक भूनें। इसके बाद पपीते में दूध डालकर आंच को मीडियम करके दूध और पपीता को तब तक पकाएं, जब तक दूध पूरी तरह सूख न जाए। इस स्टेज पर कड़ाही में स्वादानुसार चीनी या फिर गुड़ डालकर तब तक पकने दें जब तक कि दूध पूरी तरह से सूख न जाए। इसके बाद हलवे में इलायची पाउडर और कटे हुए मेवे डालकर सभी चीजों को अच्छी तरह मिक्स करें। हलवे को और दो मिनट पकाने के बाद गैस बंद कर दें। आपका टेस्टी पपीते का हलवा बनकर तैयार है।

बेबाकी से बोलना कहीं रिश्तों पर ना पड़ जाए भारी, जानें क्या है एक्सपर्ट की राय

❍ मन और उसकी सेहत से जुड़े मुद्दों पर हमारे पास ढेरों सवाल होते हैं, बस नहीं होता जवाब पाने का विश्वसनीय स्रोत। इस कॉलम के जरिये हम एक एक्सपर्ट की मदद से आपकी जिज्ञासाओं और समस्याओं के समाधान तलाशने की कोशिश करेंगे। इस बार आपके सवालों के जवाब दे रही हैं मनोविशेषज्ञ डॉ. गगनदीप कौर...

हमेशा सच्ची बात बोलना और सच पर टिके रहना अच्छा है। लेकिन ऐसा सच जो किसी का दिल दुखाए और पके रिश्ते को ही खत्म कर दे तो ये किस काम के। अगर आप हमेशा खरा और बेबाक तरीके से बात करना पसंद करते हैं तो ये आपके पर्सनल और प्रोफेशनल दोनों ही रिश्तों पर निगेटिव असर डालता है। इस बारे में एक्सपर्ट दे रहे हैं जवाब।

मैंने अपने पेरेंट्स और घरवालों से लड़–झगड़कर शादी की है, पर अब मैं अपने इस निर्णय पर पछता रही हूं। अपनी मर्जी से शादी करने के जिद में मैंने अपने पति के स्वभाव से जुड़ी कई बातों को अनदेखा कर दिया था। वह मेरी इज्जत नहीं करते। बहस होने पर मुझे घर छोड़कर जाने के लिए कहते हैं। मुझ पर हाथ उठा चुके हैं। मेरे पास वापस जाने के लिए अब कोई सपोर्ट सिस्टम भी नहीं हैं। यहां तक कि इस रिश्ते के लिए मैंने अपनी नौकरी भी छोड़ दी। किसी को अपनी स्थिति बताने में भी मुझे हिचक हो रही है, क्योंकि सब मुझे ही दोष देंगे कि तुमने हमारी बात नहीं मानी। इस स्थिति से खुद को कैसे निकालूं?

– अंकिता वर्मा, नई दिल्ली

जब हम किसी से इतना ज्यादा प्यार करते हैं, उसके लिए अपना घर–परिवार और नौकरी तक छोड़ देते हैं, उसके प्रति पूरी तरह से समर्पित हो जाते हैं और जब वही व्यक्ति हमारी इज्जत नहीं करता है, तो वाकई बहुत बुरा लगता है। घरवालों के पास वापस जाने या उनसे अपनी समस्या साझा करने को लेकर आपकी हिचक को मैं समझ सकती हूं। आपकी जिंदगी में अभी चाहे जितनी भी चुनौतियां हों, पर इस बात को हमेशा याद रखें कि घरवाले साथ कभी नहीं छोड़ते। इस बात को समझिए कि घरवालों से अपनी परेशानी साझा करने से वो ज्यादा–से–ज्यादा आपको दो बातें सुनाएंगे। शायद इस बात का थोड़ा ताना भी मारेंगे, लेकिन यह समझिए कि अपनी गलती मानने में कोई दिक्कत नहीं है। आपने अपने पति को समझने में गलती की और यह गलती अब आपकी जिंदगी पर भारी पड़ रही है, इस बात को न सिर्फ स्वीकारिए, बल्कि इस बारे में अपनी झिझक को छोड़ते हुए घरवालों से बात कीजिए। उन्हें बताइए कि आपको क्या समस्या हो रही है। इस मुश्किल वक्त में आपका साथ वही देंगे। कहते हैं कि सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आए, तो उसे भूला नहीं कहते। ऐसे लोगों की मदद ही की जाती है। जिस समय आपने शादी करने का यह निर्णय लिया था, उस वक्त आपकी उम्र भी कम रही होगी और तजुर्बा भी। सामने वाले ने भी आपसे वादा खिलाफी की है, जिस वजह से आप आज इस स्थिति में हैं। खुद को अपराध–बोध से बाहर निकालिए। घरवालों के पास जाएं। उनसे अपनी परेशानी साझा करें और मदद मांगें, क्योंकि आपको आने वाले समय में उनके साथ और सपोर्ट की जरूरत पड़ेगी। आप अपने पति से भी बात कर सकती हैं कि क्या वह इस रिश्ते को बेहतर बनाने के लिए अपनी ओर से कोशिश करना चाहते हैं। अगर उनका जवाब सकारात्मक हो, तो उनके साथ कपल काउंसलिंग के लिए जाएं। अगर आपको लगता है कि आप अपने स्तर पर हर तरह की कोशिश कर चुकी हैं, तो फिर बेहतर यही है कि आप अपने परिवार से संपर्क करें, उन्हें अपनी समस्या बताएं और साथ मिलकर आगे का रास्ता तय करें।

मुझे स्पष्ट बोलना पसंद है, फिर चाहे मेरी बातें कड़वी ही क्यों न हों। मेरे इस स्वभाव के कारण मेरे दोस्तों की संख्या धीरे–धीरे न के बाराबर रह गई है। क्या मुझे अपना यह स्वभाव बदलना चाहिए?

–तन्वी गौड़, लखनऊ

बेबाक होना एक खूबी है। पर, वो शब्द जो किसी को घाव दे जाएं, तो ऐसी बेबाकी का क्या फायदा। कई बार बात करते वक्त यह समझना भी जरूरी होता है कि सामने वाले की सुनने की क्या क्षमता है और आपका उद्देश्य क्या है। आपके बोलने का तरीका अगर दोस्तों को दूर कर रहा है, तो जरूरी है कि आप अपने स्वभाव के इस पक्ष में बदलाव लाएं। सोचें कि सामने वाला क्या सुनना चाह रहा है। उसके बाद इस पर गौर करें कि आप क्या कहना चाह रही हैं। बातचीत करते वक्त सामने वाले पर आरोप लगाने की जगह, अपने बोलने की शैली में बदलाव लाएं। सामने वाले को सलाह देने के रूप में बात करें। उस पर अपनी बात थोपें नहीं। जो दोस्त दूर चले गए हैं, उन्हें फोन करें। माफी मांगे और स्पष्ट तरीके एक–दूसरे से बात करें।

पीरियड पेन करता है परेशान तो इस बार आजमाकर देखें ये ट्रिक्स

❍ एक अध्ययन के मुताबिक 70 प्रतिशत से ज्यादा भारतीय महिलाएं पीरियड के दौरान किसी–न–किसी तरह की परेशानी का सामना करती हैं। इन समस्याओं से उबरने के लिए दर्द निवारक दवाएं ही एकमात्र सहारा नहीं हैं। आप अपनी जीवनशैली में कुछ जरूरी बदलाव लाकर भी इन परेशानियों से बच सकती हैं। बता रही हैं आयुषी गुप्ता...

पीरके चार–पांच दिन अधिकांश महिलाओं के लिए परेशानी भरे ही होते हैं। कभी दर्द हावी हो जाता है, तो कभी बिना किसी बात के मूड खराब हो जाता है। ये परेशानियां कभी–कभार इतनी ज्यादा हावी हो जाती हैं कि पेनकिलर का सहारा लेने के अलावा कोई और विकल्प नहीं बचता। पर हर दिन पेनकिलर भी तो नहीं खाया जा सकता। ऐसे में पीरियड के दौरान कुछ बातों का ध्यान में रखकर भी आप पीरियड की परेशानियों पर काबू पा सकती हैं३

1 नमक पर रखें नियंत्रण

अगर आप पीरियड के दौरान होने वाले क्रैम्प से बचना चाहती हैं, तो आपके लिए यह जानना जरूरी है कि खासतौर से पीरियड के दौरान आपको नमक का सेवन बेहद संतुलित मात्रा में करना होगा। ज्यादा नमक के सेवन से पेट के निचले हिस्से में दर्द यानी क्रैम्प की समस्या और ज्यादा बढ़ जाती है। इतना ही नहीं, इसकी वजह से ब्लोटिंग यानी पेट फूलने की समस्या भी बढ़ जाती है। प्रोसेस्ड फूड और जंक फूड में सोडियम की मात्रा ज्यादा होती है, जिनका सेवन पीरियड के दौरान आपकी परेशानियां बढ़ा सकता है। अमेरिकन जर्नल ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी में प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक ज्यादा सोडियम के सेवन से शरीर के भीतर पानी इकट्ठा होने लगता है, जिसका असर हमारे पाचन तंत्र पर पड़ता है।

2 न करें हाइजीन की अनदेखी

सेहतमंद जिंदगी जीने के लिए सही आहार के साथ–साथ हाइजीन भी जरूरी है। हाइजीन की यह जरूरत पीरियड के दौरान और ज्यादा बढ़ जाती है। इस दौरान निजी अंगों की साफ–सफाई का खास ध्यान दें। एक ही सैनिटरी पैड या टैंपून को कई–कई घंटे पहने रहने की गल्ती नहीं करें। चार से छह घंटे में इन्हें बदल लें। कई घंटे तक एक ही पैड या टैंपून के इस्तेमाल से शरीर के उस हिस्से में बैक्टीरिया का ग्रोथ बढ़ता है और वहां से बदबू आने लगती है। नियमित अंतराल पर पैड या टैंपून नहीं बदलने से वहां रैशेज होने और टॉक्सिक शॉक सिंड्रोम होने का खतरा भी बढ़ जाता है। कैनेडियन जर्नल ऑफ इंफेक्शियस डिजीज एंड मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी में प्रकाशित शोध में भी इस बात की तस्दीक की गई है।

3 वक्त पर खाएं खाना

पीरियड के दौरान अपनी सेहत दुरुस्त रखना चाहती हैं, तो समय पर खाना नहीं खाने की अपनी आदत को आपको छोड़ना होगा। पीरियड के दौरान लंबे समय तक खाली पेट रहना ठीक नहीं, क्योंकि इससे शरीर में ऊर्जा की कमी होगी और मूड बिगड़ा रहेगा, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि भूख लगने पर आप जंक फूड से अपना पेट भर लें। शरीर को पोषण चाहिए, मैदा, चीनी और नमक नहीं। जंक फूड में नमक और चीनी दोनों की ही मात्रा ज्यादा होती है। इसके सेवन से आपको पीरियड में किसी भी तरह का आराम नहीं आएगा, बल्कि आपकी परेशानियों में इजाफा ही होगा।

4 एसेंशियल ऑयल से करें मसाज

पीरियड के दर्द को कम करने के लिए मसाज की मदद लें। इस दर्द को कम करने में लगभग 20 मिनट की एसेंशियल ऑयल की मसाज लाभदायक हो सकती है। कुछ विशेष बिंदुओं को दबाने से पेट, बाजू और पीठ के दर्द को कम करने में मदद मिल सकती है। पीरियड दर्द में लैवेंडर, पुदीना, गुलाब और सौंफ ऑयल सहायक हो सकता है। एसेंशियल ऑयल को हमेशा नारियल, बादाम या ऑलिव ऑयल के साथ मिलाकर इस्तेमाल करना चाहिए।

5 ज्यादा कॉफी पीने से बचें

पीरियड के दौरान चाय या कॉफी की चुस्कियां अच्छी तो लगती हैं, पर इस वक्त कॉफी का ज्यादा सेवन आपकी परेशानियों को घटाने की जगह बढ़ा सकता है। पीरियड के दौरान ज्यादा कॉफी का सेवन न सिर्फ दर्द को बढ़ाएगा, बल्कि स्तनों को भी ज्यादा संवेदनशील बना देगा। तैयबा यूनिवर्सिटी मेडिकल साइंसेज की पत्रिका में प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक पीरियड के दौरान बहुत ज्यादा कॉफी के सेवन से पीरियड न सिर्फ लंबा खिंच सकता है, बल्कि इस दौरान ब्लीडिंग भी ज्यादा हो सकती है।

6 करें हल्के–फुल्के व्यायाम

पीरियड्स के दौरान व्यायाम करना किसी को भी पसंद नहीं होता, लेकिन व्यायाम करने से शरीर में एंडोर्फिन हार्मोन का स्राव होता है। यह हार्मोन दर्द को कम करने में मदद करता है। इस दौरान हल्के व्यायाम जैसे टहलना, योगा, स्ट्रेचिंग और ध्यान किया जा सकता है। जरूरी नहीं कि 30 से 40 मिनट तक व्यायाम किया जाए। दर्द को कम करने और दिमाग को दर्द से हटाने के लिए 15 से 20 मिनट का व्यायाम भी बेहद प्रभावी साबित होता है। पीरियड के दौरान ज्यादा ऊर्जा की खपत करने वाले व्यायाम करने से बचें।

संक्षिप्त

भारत के वेलावन सेंथिलकुमार ने जीता बुडापेस्ट ओपन का खिताब, फाइनल में बालाज फरकास को दी मात

बुडापेस्ट,एजेंसी। भारत के वेलावन सेंथिलकुमार ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए फाइनल में बालाज फरकास को हराकर हंगरी की राजधानी में खेले गए बुडापेस्ट ओपन स्क्वाश के रूप में अपना पहला पीएसए कॉपर–लेवल का खिताब जीता। विश्व रैंकिंग में 54वें स्थान पर काबिज और आठवीं वरीयता प्राप्त भारतीय खिलाड़ी ने 43,500 अमेरिकी डॉलर की पुरस्कार राशि वाले टूर्नामेंट के फाइनल में स्थानीय खिलाड़ी फरकास को 11–4, 11–2, 11–3 से हराकर अपना 11वां पीएसए टूर खिताब जीता। यह दोनों खिलाड़ी तीसरी बार आमने–सामने थे। सेंथिलकुमार ने 2024 में इस प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ पिछला मुकाबला जीता था। सेंथिलकुमार ने सेमीफाइनल में हमवतन वीर चोटरानी को (9–11, 11–8, 11–7, 1–11, 12–10) से हराया था। उन्होंने क्वार्टर फाइनल में मलयेशिया के ईन यो को पराजित किया था।

क्या लगातार तीसरी बार यूएस ओपन का खिताब अपने नाम कर सकेंगी सबालेंका? खराब फॉर्म बन सकती है बाधा

न्यूयॉर्क,एजेंसी। विश्व की नंबर एक खिलाड़ी अरिना सबालेंका हाल की खराब फॉर्म के बावजूद रविवार से शुरू होने वाले यूएस ओपन टेनिस टूर्नामेंट में खिताबी हैट्रिक पूरी करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। सबालेंका पिछले कुछ टूर्नामेंटों में चौथे दौर से आगे भी नहीं बढ़ पाई हैं जिसे देखते हुए वह सेरेना विलियम्स (2012–14) के बाद लगातार तीन यूएस ओपन खिताब जीतने वाली पहली खिलाड़ी बनने के लिए शायद ही तैयार दिखती हैं। लेकिन सबालेंका चिंतित नहीं लग रही हैं। वह तो विद्रोही लग रही हैं। जो लोग यह जानना चाहते थे कि उनके खेल में क्या खराबी है, उनके जवाब में सबालेंका ने कहा, श्शायद लोगों में ही कुछ खराबी है।श सबालेंका ने साल की अच्छी शुरुआत की। ऑस्ट्रेलियन ओपन के फाइनल में एलेना रायबाकिना से हारने के बाद उन्होंने इंडियन वेल्स और मियामी में लगातार दो हार्ड कोर्ट खिताब जीते। विंबलडन में चौथे दौर में नाओमी ओसाका से हारने के बावजूद माना जा रहा था कि वह जल्द ही अपनी पुरानी फॉर्म में लौट आएंगी, क्योंकि हार्ड कोर्ट उनकी पसंदीदा सतह रही है। लेकिन सबालेंका टोरंटो में चौथे दौर में एकातेरिना एलेक्जेंड्रोवा से हार गई और सिनसिनाटी में सारा बेजलेक ने उन्हें दोनों सेटों में बढ़त का फायदा नहीं उठाने दिया। सबालेंका ने कहा, वह दौर मेरे लिए अच्छा नहीं था। मैं अपना बचाव नहीं करना चाहती, लेकिन जाहिर है कि मैं उस दौर के बारे में बात नहीं करना चाहती। मैं कई चीजों से जूझ रही थी। मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं किया। ये कड़े सबक मुझे और भी ज्यादा मजबूत बनाएंगे और मैं और कड़ी मेहनत करूंगी। वापसी करना बस समय की बात है। सबालेंका लगातार तीसरा खिताब जीतने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने यूएस ओपन 2024 में फाइनल में जेसिका पेगुला को हराकर पहली बार खिताब जीता था। पिछले साल उन्होंने अमांडा अनिसिमोवा को हराकर अपने खिताब का बचाव किया था।

चार महीने से अधिक समय बाद वापसी करेंगे अल्कारेज, खिताब बचाने की चुनौतीय फॉर्म में वापसी का भरोसा

न्यूयॉर्क,एजेंसी। दाहिनी कलाई में लगी चोट के कारण चार महीने से अधिक समय तक खेल से बाहर रहने वाले कार्लोस अल्कारेज को उम्मीद है कि वह अपनी पुरानी फॉर्म में लौट कर रविवार से शुरू होने वाले यूएस ओपन टेनिस टूर्नामेंट में अपने खिताब का बचाव करने में सफल रहेंगे। मौजूदा चौंपियन अल्कारेज चोटिल होने के कारण फ्रेंच ओपन और विंबलडन में नहीं खेल पाए थे, लेकिन उन्हें लगता है कि वह वर्ष का अंतिम ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट खेलने के लिए तैयार हैं। स्पेन के इस 23 वर्षीय खिलाड़ी ने अप्रैल के बाद कोई प्रतिस्पर्धी में नहीं खेला है, लेकिन वह सोमवार को अच्छी शुरुआत करने के लिए प्रतिबद्ध नजर आते हैं। उनका कहना है कि उन्होंने अपनी तकनीक में कोई बदलाव नहीं किया है और शारीरिक रूप से पूरी तरह फिट होने का भरोसा जताया है। अल्कारेज ने कहा, मुझे प्रतिस्पर्धा की जरूरत है। मेरा और मेरी टीम का मानना है कि मैं पूरी तरह से तैयार हूं। वापसी का फैसला करना आसान नहीं था। मैंने इसके लिए अपनी तरफ से हर संभव प्रयास किया है। अल्कारेज मौजूदा चौंपियन हैं और लगातार दूसरी बार खिताब जीतने के प्रबल दावेदार हैं। एक साल पहले उन्होंने यानिक सिनर को हराकर नंबर एक रैंकिंग हासिल की थी। इस बार सिनर नहीं खेल रहे हैं। दाहिने घुटने में चोट के कारण उन्होंने नाम वापस ले लिया है। सिनर की अनुपस्थिति में अलेक्जेंडर ज्वेरेव शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी हैं। लेकिन सबकी निगाहें अल्कारेज पर टिकी हैं, जिन्होंने इसी साल ऑस्ट्रेलियन ओपन के फाइनल में नोवाक जोकोविच को हराकर अपना सातवां ग्रैंडस्लैम खिताब जीता था।

जब दो साल एक भी सीरीज नहीं हारे तो बदलाव क्यों? सूर्यकुमार ने तोड़ी चुप्पी, टीम से निकाले जाने पर क्या कहा?

मुंबई,एजेंसी। भारत को 2026 टी20 विश्व कप में अपनी कप्तानी में चौंपियन बनाने वाले सूर्यकुमार यादव अब भारतीय टी20 टीम का हिस्सा नहीं हैं। टीम की कप्तानी भी उनसे लेकर श्रेयस अय्यर को सौंप दी गई। बीसीसीआई चयनकर्ताओं के इस फैसले ने क्रिकेट जगत को हैरान किया था। अब कई महीने बाद सूर्यकुमार यादव ने इस पूरे घटनाक्रम पर अपनी चुप्पी तोड़ी है। पूर्व भारतीय बल्लेबाज आकाश चोपड़ा के साथ बातचीत में सूर्यकुमार ने बताया कि टीम में अपना नाम नहीं देखकर उनकी पहली प्रतिक्रिया क्या थी। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि वह खुद को अगले दो वर्षों तक भारतीय टी20 टीम का नेतृत्व करते हुए देख रहे थे। सूर्यकुमार ने कहा कि जब उन्हें पता चला कि टीम में उनका नाम नहीं है तो उन्होंने गुस्सा या नाराजगी जाहिर करने के बजाय मुस्कुराना चुना। उन्होंने बताया कि दबाव की परिस्थितियों में शांत रहना उनकी आदत रही है। उन्होंने कहा, श्जब मेरा नाम वहां नहीं था तो मैं मुस्कुराया। क्योंकि जब मैं एक–दो साल तक टीम के साथ क्रिकेट खेल रहा था और जब भी खेल रहा था, तो ऐसी परिस्थितियां आई हैं, जब दबाव था या चीजें मेरे हिसाब से नहीं हो रही थीं। ऐसे समय में मैं हमेशा मुस्कुराता रहा हूं। मैं खुद को सहज रखता हूं। अतीत में भी जब मुझे अच्छा करने के मौके मिले, तब मैंने उन पलों के लिए आभारी रहना सीखा है।श हालांकि, यह फैसला उनके लिए पूरी तरह अप्रत्याशित था। सूर्यकुमार ने स्वीकार किया कि 2026 में विश्वकप जीतने के बाद उन्हें उम्मीद थी कि वह आगे भी टीम की अगुआई करेंगे। उनके मुताबिक, उन्हें लगता था कि आगामी ओलंपिक और अगले टी20 विश्व कप तक टीम को आगे ले जाने की जिम्मेदारी उनके पास रहेगी।

उन्होंने कहा, 2026 आने के बाद मुझे लगा था कि आगे के दो साल तक मैं इस टीम को आगे ले जाऊंगा। ओलंपिक आएंगे, फिर एक और टी20 विश्व कप आएगा और आगे नई चुनौती होगी। लेकिन आप जो सोचते हैं और दूसरा व्यक्ति जो सोचता है, वे दो अलग चीजें हैं। अगर उन्हें लगा कि आगे बढ़ने के लिए यह बेहतर फैसला है तो उन्होंने वही फैसला लिया। जरूरी है कि उनके विचारों का भी सम्मान किया जाए। सूर्यकुमार ने यह भी साफ

किया कि वह चयनकर्ताओं के फैसले को लेकर किसी तरह की कटुता नहीं रखते। सूर्यकुमार ने माना कि चयनकर्ताओं के फैसले से उन्हें निराशा जरूर हुई। उनके मुताबिक, कप्तानी के दौरान टीम ने लगातार अच्छा प्रदर्शन किया था और ऐसे में बदलाव का कारण समझना उनके लिए आसान नहीं था। उन्होंने कहा, मैंने जो टीम चुनी गई है, उसे देखा है। मैंने श्रेयस के साथ काफी क्रिकेट खेली है। मैं जानता हूं कि वह अच्छे खिलाड़ी, अच्छे इंसान और अच्छे कप्तान भी हैं। इसलिए मेरे मन में यह नहीं था कि उन्हें कप्तान क्यों बनाया गया। लेकिन हां, मैं थोड़ा निराश था। क्योंकि आपने दो साल में एक भी सीरीज नहीं हारी है। आपने विश्व कप और एशिया कप जीता है। फिर आप चाहते हैं कि यही चीज आगे भी जारी रहे। जब सब कुछ अच्छा चल रहा हो तो बदलाव क्यों? बदलाव का कारण क्या है? यही बात मेरे दिमाग में चल रही थी। मैं करीब डेढ़ महीने तक घर पर बैठा रहा।श यानी सूर्यकुमार को श्रेयस अय्यर के कप्तान बनने से आपत्ति नहीं थी, बल्कि उन्हें अपने हटाए जाने के फैसले ने परेशान किया। सबसे ज्यादा भावुक क्षणों के बारे में बताते हुए सूर्यकुमार ने कहा कि उनके मन में बार–बार यही सवाल आ रहा था कि विश्व कप जीतने के तुरंत बाद उन्हें टीम से बाहर कैसे किया जा सकता है। उन्होंने कहा, मैं सोच रहा था, ऐसा कैसे हो सकता है? यह कैसे संभव है? हमने अभी विश्व कप जीता था। हां, आईपीएल उतना अच्छा नहीं रहा था, जितना मैं चाहता था। हम घर पर बैठे थे। दोस्त आए, परिवार आया। सभी ने कहा कि ठीक है, यह जिंदगी का हिस्सा है। लेकिन जब वे घर से चले जाते हैं तो हम घर पर अकेले रह जाते हैं। इस बयान से साफ है कि बाहर किए जाने का फैसला उनके लिए भावनात्मक रूप से आसान नहीं था।

सूर्यकुमार ने यह भी खुलासा किया कि टीम की घोषणा से दो–तीन दिन पहले चयनकर्ताओं ने उनसे बात की थी। उन्हें साफ तौर पर कहा गया था कि अब आगे बढ़ने का समय आ गया है। उन्होंने कहा, श्टीम की घोषणा से दो–तीन दिन पहले उन्होंने मुझे फोन किया था। उन्होंने कहा कि अब आगे बढ़ने का समय है। मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। क्योंकि यह मेरी गलती नहीं है। सूर्यकुमार ऐसा कभी नहीं रहा है। जिसने भी फैसला लिया, उसने जरूर सोचा होगा कि टीम के लिए यही बेहतर है और आगे चलकर यह अच्छा फैसला होगा। आपने फैसला लिया और मुझे बताया, इसमें कोई समस्या नहीं है। सूर्यकुमार ने साफ किया कि वह भविष्य में भी क्रिकेट खेलने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा, मैं तैयार हूं। आप मुझे कभी भी बुला सकते हैं। मैं कभी भी क्रिकेट खेल रहा हूं और खेलता रहूंगा। जब आपको लगे कि समय सही है और परिस्थितियां सही हैं, मैं तैयार हूं। सूर्यकुमार ने श्रेयस अय्यर के नेतृत्व की तारीफ करते हुए कहा कि उन्हें भरोसा है कि नई कप्तानी में भी भारतीय टीम अच्छा प्रदर्शन कर सकती है। उनका रुख यह बताता है कि कप्तानी और टीम से बाहर किए जाने की निराशा के बावजूद उन्होंने चयनकर्ताओं के फैसले को सार्वजनिक विवाद में बदलने के बजाय सम्मान के साथ स्वीकार किया है। अब देखना होगा कि क्या भविष्य में भारतीय टीम को उनकी दोबारा जरूरत महसूस होती है और सूर्यकुमार को एक बार फिर टी20 जर्सी पहनने का मौका मिलता है।

भारत कल शुरू करेगा अभियान, थाईलैंड से है पहला मुकाबला, क्या हो सकती है प्लेइंग-11?

दुबई,एजेंसी। भारतीय महिला क्रिकेट टीम रविवार को महिला एशिया कप टी20 में अपने अभियान की शुरुआत थाईलैंड के खिलाफ करेगी। एशिया कप में पिछले एक दशक से भारत का दबदबा रहा है, लेकिन इस बार टीम के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी फॉर्म और प्रदर्शन में निरंतरता हासिल करने की होगी। भारत ने टी20 एशिया कप के 2016–17 से अब तक खेले गए पांच संस्करणों में तीन बार खिताब जीता है। हालांकि मौजूदा फॉर्म टीम के लिए चिंता का कारण है। भारत ने इस साल खेले 16 टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में से नौ में हार झेली है। टी20 विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मिली पिछली हार ने भारत का अभियान ग्रुप चरण में ही खत्म कर दिया था। अब टीम एशिया कप में बेहतर प्रदर्शन के साथ लय हासिल करना चाहेगी। कप्तान हरमनप्रीत कौर के लिए यह टूर्नामेंट व्यक्तिगत तौर पर भी अहम है। उनकी फॉर्म और टी20 क्रिकेट में भविष्य को लेकर सवाल उठते रहे हैं। हालांकि ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विश्व कप के अहम मुकाबले में उन्होंने महत्वपूर्ण पारी खेली थी, लेकिन पूरे टूर्नामेंट में उनकी बल्लेबाजी में निरंतरता की कमी चर्चा का विषय रही। भारत के सामने एशिया कप के बाद अगले महीने एशियाई खेलों की चुनौती भी है। ऐसे में टीम प्रबंधन चाहेगा कि कप्तान समेत प्रमुख खिलाड़ी टूर्नामेंट में अपनी सर्वश्रेष्ठ लय हासिल करें। भारत को एशिया कप में स्टार बल्लेबाज जेमिमा रोड्रिग्स की कमी खलेगी। वह इस टूर्नामेंट और एशियाई खेलों से बाहर हैं। उनकी जगह टीम में प्रतिभाशाली बल्लेबाज प्रतिका रावल को शामिल किया गया है।

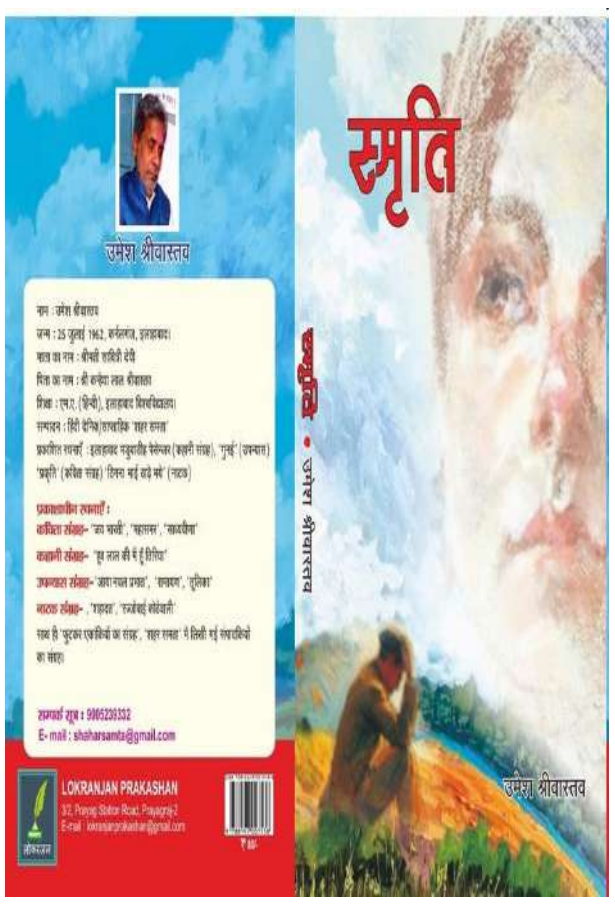

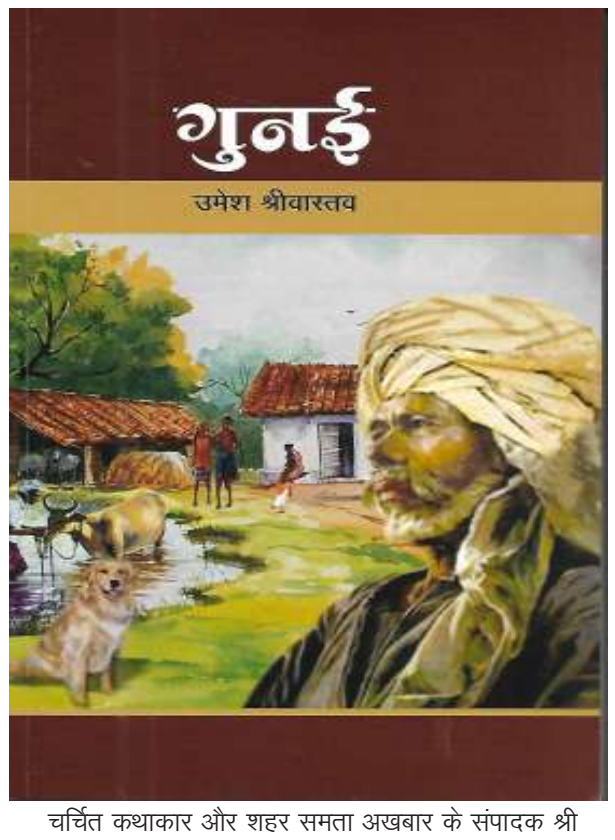

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

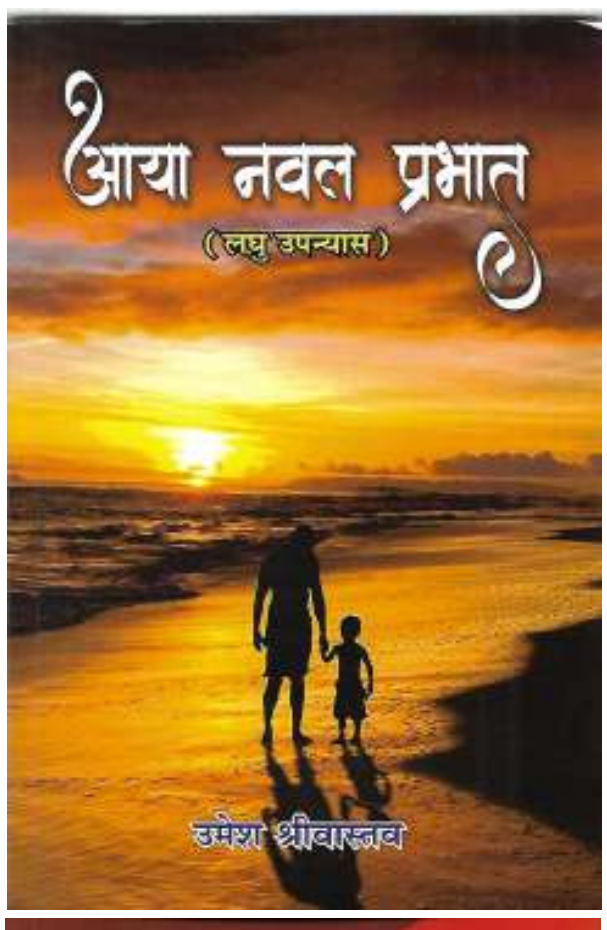

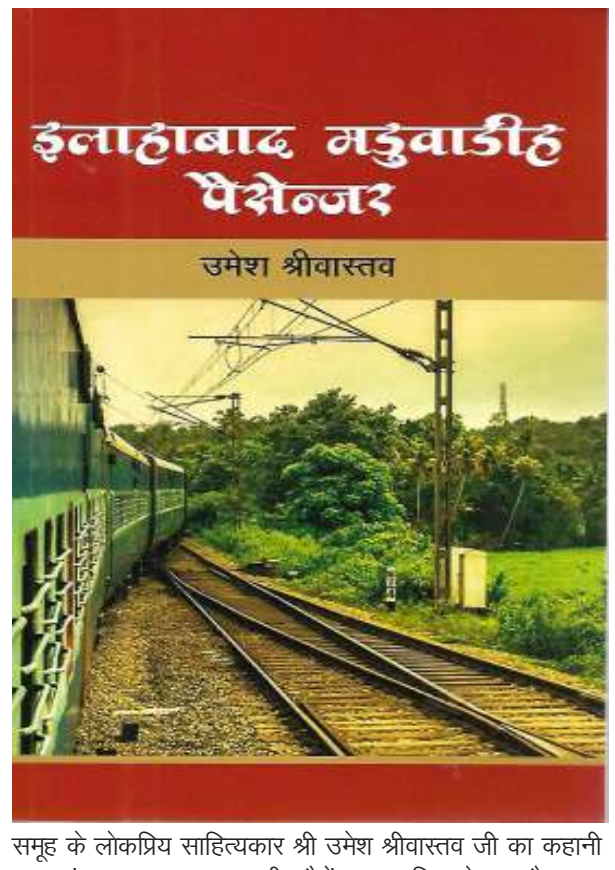

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

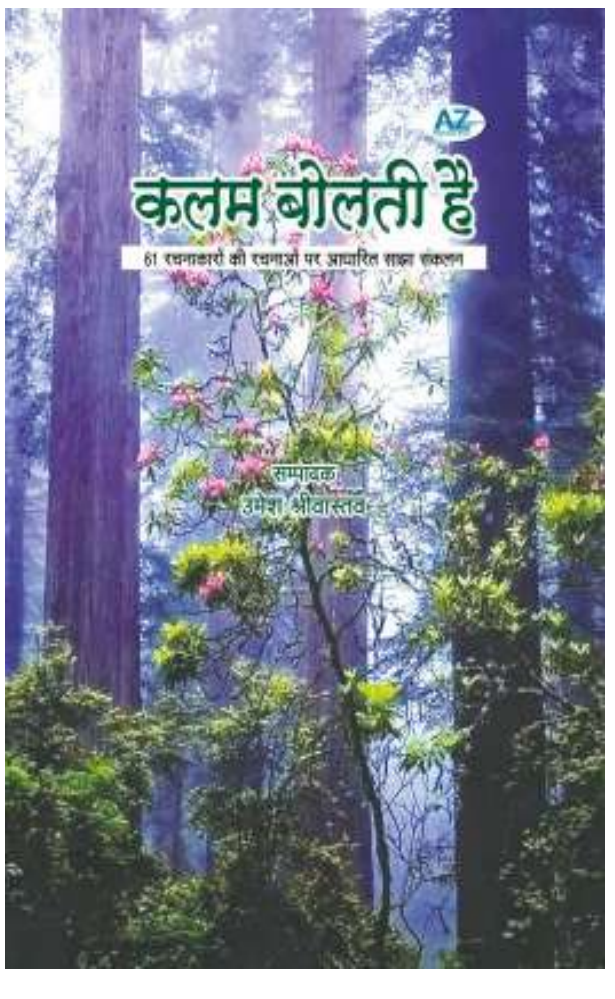

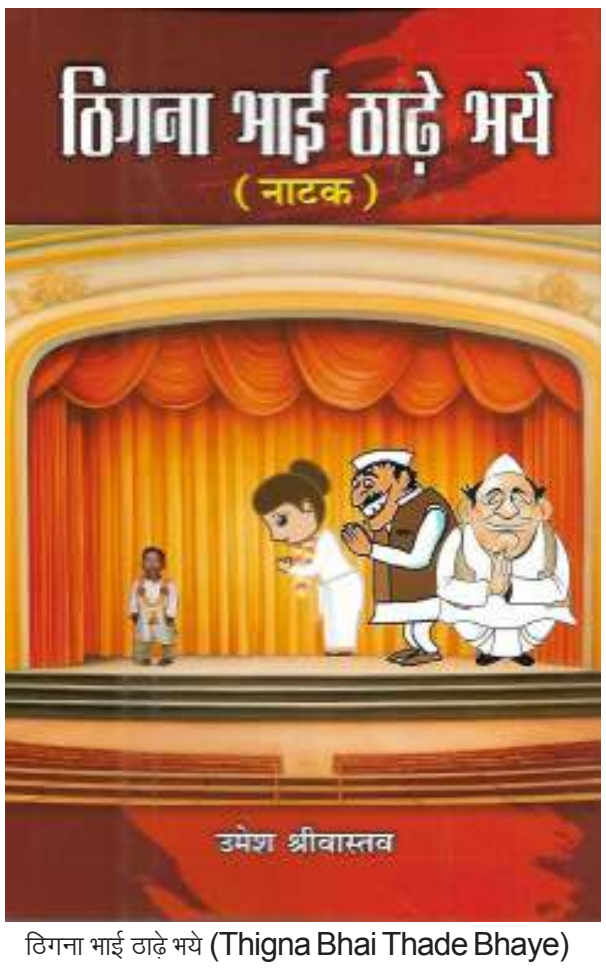

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

एक्सप्लेनर: अर्ली वार्निंग सिस्टम होने के बावजूद नेपाल में इतनी बड़ी तबाही कैसे हुई, कहां चूका सिस्टम?

काठमांडू ,एजेंसी ।नेपाल के रासुवा इलाके में 26 अगस्त को आई अचानक बाढ़ ने भारी तबाही मचाई। इसमें 475 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 1500 से ज्यादा लोग लापता हैं।

प्रभावित लोगों में बड़ी संख्या विदेशी नागरिकों की है, जो ट्रेकिंग, गाइडेड टूर या पवित्र हिंदू तीर्थस्थल की यात्रा के लिए क्षेत्र में पहुंचे थे। इसके बाद सवाल उठा कि जब नेपाल में बाढ़ और मौसम से जुड़ी आपदाओं की निगरानी के लिए कई व्यवस्थाएं मौजूद हैं, तो इतनी तेजी से आई बाढ़ में लोगों को बचने के लिए पर्याप्त समय क्यों नहीं मिल पाया। इसे समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि नेपाल के पास कौन–कौन से निगरानी और चेतावनी तंत्र हैं? वे किस तरह काम करते हैं? कहां कमी रह गई? क्या चुनौतियां मौजूद हैं? रासुवा की बाढ़ किस तरह अलग थी? नेपाल के जल व मौसम विज्ञान विभाग के पास बाढ़, मौसम और हिमालयी क्षेत्रों से जुड़े खतरों की निगरानी के लिए कई व्यवस्थाएं हैं। विभाग जल और मौसम से जुड़े आंकड़े जुटाने, उनका विश्लेषण करने और खराब मौसम व जल संबंधी घटनाओं की जानकारी लोगों और संबंधित एजेंसियों तक पहुंचाने का काम करता है। मानसून के दौरान बाढ़ का पूर्वानुमान और शुरुआती चेतावनी भी जारी की जाती है। नेपाल में कई नदी निगरानी केंद्र हैं। इनमें लगे उपकरण नदी के जलस्तर और बहाव को मापते हैं और आंकड़े निगरानी केंद्रों तक भेजते हैं। नदियों के लिए चेतावनी और खतरे का स्तर भी तय किया जाता है, ताकि पानी एक निश्चित स्तर तक पहुंचने पर चेतावनी जारी की जा सके। नेपाल में स्वचालित मौसम केंद्रों के जरिए बारिश और मौसम से जुड़े आंकड़े जुटाए जाते हैं। इनका इस्तेमाल मौसम की स्थिति समझने और बाढ़ के पूर्वानुमान में किया जाता है। नेपाल में मौसम रडार भी हैं, जिनका इस्तेमाल बारिश और मौसम की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए किया जाता है। इससे भारी बारिश जैसी घटनाओं की निगरानी में मदद मिलती है। ऊंचाई वाले क्षेत्रों में बर्फ और हिमपात की स्थिति पर नजर रखने के लिए स्वचालित हिमपात केंद्र मौजूद हैं। इनसे हिमालयी क्षेत्रों में बर्फ से जुड़े बदलावों को समझने में मदद मिलती है। आईसीआईएमओडी की फ्लैश फ्लड पूर्वानुमान प्रणाली नेपाल के 12,428 नदी खंडों के लिए संभावित फ्लैश फ्लड का अनुमान लगाती है और 54 घंटे पहले तक खतरे का पूर्वानुमान दे सकती है। इसमें बारिश और मौसम से जुड़े पूर्वानुमानों के आधार पर नदियों में संभावित पानी के बहाव का अनुमान लगाया जाता है। इस व्यवस्था में बाढ़ के संभावित खतरे को अलग–अलग रंगों से दिखाया जाता है। नीला सामान्य स्थिति, पीला बढ़ा हुआ खतरा, नारंगी गंभीर खतरा और लाल बहुत ज्यादा बाढ़ के खतरे को दर्शाता है। हालांकि, आईसीआईएमओडी के मुताबिक, यह व्यवस्था मुख्य रूप से तेज बारिश, गरज और स्थानीय मौसम से पैदा होने वाली फ्लैश फ्लड का पूर्वानुमान लगाने के लिए तैयार की गई है। बड़ी नदियों के लिए अलग पूर्वानुमान व्यवस्था भी है। आईसीआईएमओडी के अनुसार, यह प्रणाली 519 नदी खंडों के लिए 10 दिन तक नदी के संभावित बहाव का अनुमान देती है। नेपाल में चेतावनी को स्थानीय लोगों तक पहुंचाने के लिए सामुदायिक स्तर की शुरुआती चेतावनी व्यवस्था भी विकसित की गई है। इसका उद्देश्य बाढ़ की जानकारी को स्थानीय समुदायों तक समय पर पहुंचाना है। घटना इतनी तेज थी कि इससे भूकंप जैसी भूकंपीय तरंग पैदा हुई। शुरुआत में इसे भूकंप से जोड़ा गया, लेकिन बाद में अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के विश्लेषण में इसे हिमनद के टूटने और मलबे के बहाव से जोड़कर देखा गया। हालांकि नदी के अस्थायी रूप से रुकने या पानी जमा होने जैसी किसी प्रक्रिया की भूमिका रही थी या नहीं, इसकी पूरी जांच अभी जारी है। द काठमांडू पोस्ट के मुताबिक, नेपाल की मौजूदा चेतावनी व्यवस्था नदी में बाढ़ आने के बाद उसके बढ़ते जलस्तर को पकड़ सकती है, लेकिन बाढ़ पैदा करने वाली घटना अगर ऊंचाई वाले क्षेत्र में हो तो उसे स्रोत पर पकड़ना ज्यादा मुश्किल है। हिमनद टूटने, बर्फ–चट्टान गिरने या भूस्खलन जैसी घटना के बाद जब तक उसका असर नीचे नदी में लगे निगरानी केंद्र तक पहुंचता है, तब तक चेतावनी के लिए मिलने वाला समय काफी कम हो सकता है।

नेपाल में आपदा के बाद कैबिनेट की आपात बैठक: सिचुआन भूकंप के बाद दोबारा बाढ़ का नया अलर्ट, अब जमीनी हालात क्या?

काठमांडू (नेपाल) एजेंसी। नेपाल के प्रधानमंत्री बलेंद्र शाह ने शुक्रवार को सिंह दरबार स्थित प्रधानमंत्री कार्यालय में मंत्रिमंडल की बैठक बुलाई। यह बैठक 26 अगस्त को रसुवा के भोटेकोशी क्षेत्र में आई विनाशकारी बाढ़ से हुए नुकसान पर महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए थी। इसमें बचाव, राहत और पुनर्निर्माण प्रयासों पर चर्चा हुई। प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) नेपाल ने फेसबुक पर यह जानकारी दी। नेपाल इस प्राकृतिक विपदा में 26 अगस्त को तिब्बत–नेपाल सीमा पर अचानक आई बाढ़ के कारण के कारण फंसा। इसने भोटे कोशी और त्रिशूली नदी प्रणालियों में पानी, गाद और पत्थरों का शक्तिशाली बहाव भेजा, जिससे व्यापक तबाही हुई। नेपाल पुलिस के अनुसार, शुक्रवार तक आपदा में मृतकों की संख्या 469 हो गई है, जबकि 1,545 लोग घायल हुए और बचाए गए।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर. 9190052 39332
.919450482227

केरल: वीडी सतीशन से क्यों भिड़ा कांग्रेस नेता ? समझाने पर धमकी देकर बोला- अगर मुझे आया गुस्सा तो तुम क्या करोगे

तिरुवनंतपुरम , एजेंसी। केरल के तिरुवनंतपुरम में एक कार्यक्रम में शामिल होने जा रहे मुख्यमंत्री वी. डी. सतीशन का काफिला कथित तौर पर रोकने के आरोप में कांग्रेस के एक नेता को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने शनिवार को जानकारी दी कि तिरुवनंतपुरम जिला कांग्रेस कमेटी के नेता अनिल कुमार उर्फ चेंथी अनी को गिरफ्तार किया गया है। उनके और अन्य लोगों के खिलाफ शुक्रवार शाम चेंथी में काफिला रोकने के आरोप में मामला दर्ज किया गया था। सतीशन शुक्रवार शाम सामाजिक सुधारक श्री नारायण गुरु की जयंती के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने के लिए चेंपाझंथी जा रहे थे। इसी दौरान चेंथी में श्री नारायण गुरु से जुड़े एक अन्य कार्यक्रम का आयोजन कर रहे लोगों ने मुख्यमंत्री के वाहन को रुकने का इशारा किया। पुलिस के अनुसार, उनके अनुरोध पर सतीशन वाहन से बाहर आए। टेलीविजन पर प्रसारित दृश्यों में उन्हें कांग्रेस नेता अनी के साथ बहस करते हुए देखा गया। क्यों मचा सीएम के काफिले को रोकने पर बवाल?

कुछ मिनट मौके पर रुकने के बाद सतीशन वापस अपने वाहन में बैठे और वहां से चले गए। पुलिस ने बताया कि मुख्यमंत्री के कार्यक्रम में चेंथी में होने वाले किसी कार्यक्रम का जिक्र नहीं था। घटना के बाद कार्यक्रम के आयोजकों जिनमें कांग्रेस कार्यकर्ता भी शामिल थे, ने कुछ महीने पहले की एक तस्वीर जारी की। इसमें वे सचिवालय में मुख्यमंत्री से मुलाकात कर उन्हें चेंथी के कार्यक्रम में शामिल होने का निमंत्रण देते नजर आ रहे हैं। आयोजकों ने पत्रकारों से यह भी कहा कि पुलिस गुरुवार को कार्यक्रम स्थल पर गई थी और मंच पर बैठने वाले लोगों की संख्या को लेकर सुझाव दिया था। शुक्रवार देर रात अनी को हिरासत में लिया गया और श्रीकार्य पुलिस थाने ले जाया गया। वहां मामला दर्ज किया गया। पूछताछ के बाद उनकी गिरफ्तारी दर्ज की गई। उनके खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धाराओं 126(2), 351(2) और 132 के तहत मामला दर्ज किया गया है। ये धाराएं क्रमशरू गलत तरीके से रोकने, आपराधिक धमकी देने और किसी लोक सेवक को उसके कर्तव्य के निर्वहन से रोकने के लिए हमला या आपराधिक बल के इस्तेमाल से संबंधित हैं। प्राथमिकी के अनुसार, शाम करीब 5रू55 बजे मुख्यमंत्री का वाहन चेंथी में रुका। मुख्यमंत्री ने वहां कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं को एकत्र देखा और उनसे बातचीत की। प्राथमिकी में कहा गया है, श्श्आरोपी ने कथित तौर पर मुख्यमंत्री का आक्रामक तरीके से सामना किया और ऊंची आवाज में पूछा कि कार्यक्रम पहले से तय होने के बावजूद वह इसमें शामिल क्यों नहीं हो रहे हैं। जब उसे आक्रामक व्यवहार से बचने के लिए कहा गया तो आरोपी ने कथित तौर पर धमकी देते हुए कहा, श्अगर मुझे गुस्सा आ गया तो तुम क्या करोगे?श इस तरह उसने सार्वजनिक रूप से मुख्यमंत्री का अपमान किया और काफिले के साथ ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों के आधिकारिक काम में बाधा डाली। मामला इलाके में रास्ता साफ कराने की ड्यूटी पर तैनात एक अधिकारी के बयान के आधार पर दर्ज किया गया है। पुलिस ने बताया कि अनी को रिमांड की प्रक्रिया के तहत अदालत में पेश किया जाएगा। अधिकारियों ने कहा कि घटना के समय बनाए गए वीडियो के आधार पर अन्य लोगों की भूमिका की भी जांच की जा रही है।

`ये महान अमेरिकी और बहादुर देशभक्त', ट्रंप ने की भारतीय मूल के अंतरिक्ष यात्री अनिल की तारीफ, और क्या कहा ?

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर मौजूद भारतीय मूल के नासा अंतरिक्ष यात्री अनिल मेनन और उनके दो साथियों की तारीफ की है। ट्रंप ने उन्हें श्महान अमेरिकी, महान देशभक्त और बहादुर लोगश बताया। साथ ही, राष्ट्रपति ट्रंप ने पृथ्वी पर लौटने के बाद उन्हें ओवल ऑफिस आने का न्योता भी दिया। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ह्यूस्टन में नासा के जॉनसन स्पेस सेंटर से हुई बातचीत के दौरान कहा, ष्आपके साथ होना बहुत सम्मान की बात है। मैं जेसिका, अनिल और जैक का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। ये महान अमेरिकी, महान देशभक्त और बहादुर लोग हैं।ष डोनाल्ड ट्रंप ने अनिल मेनन, जेसिका मीर और जैक हैथवे के साहस की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस मिशन के लिए उनका चुना जाना ही एक बड़ी उपलब्धि थी। वहीं, अमेरिकी अंतरिक्ष बल में कर्नल मेनन ने ट्रंप से कहा कि उन्हें अंतरिक्ष में सेवा करने पर गर्व है। उन्होंने पिछले हफ्ते पूरे किए गए स्पेस वॉक के बारे में भी बताया। मेनन ने कहा, ष्धन्यवाद, सर। मैं अंतरिक्ष बल में एक कर्नल के तौर पर यह कहना चाहूंगा कि कल्पना से परे सबसे बड़े क्षेत्र में सेवा करने पर मुझे बहुत गर्व है।ष उन्होंने कहा, षपिछले हफ्ते, मुझे स्पेस वॉक करने का बहुत बड़ा सम्मान मिला और रोबोटिक आर्म से स्पेस स्टेशन को देखने और हमारी अद्भुत काबिलियत को देखने का मौका मिला।ष मेनन ने कहा कि उन्हें बहुत गर्व और उत्साह है कि अमेरिका लो–अर्थ ऑर्बिट (पृथ्वी की निचली कक्षा) से आगे के मिशन की तैयारी कर रहा है। उन्होंने कहा, ष्हम चंद्रमा, चंद्र बेस और मंगल ग्रह की अपनी अगली यात्रा का मार्ग प्रशस्त करने जा रहे हैं। हमें उस दिशा में आगे बढ़ाने के लिए आपका धन्यवाद।ष यह बातचीत राष्ट्रपति ट्रंप की ओर से अमेरिकी अंतरिक्ष अकादमी की योजना की घोषणा के बाद हुई।

उन्होंने अंतरिक्ष यात्रियों से कहा कि प्रस्तावित संस्थान को वेस्ट पॉइंट, नौसेना अकादमी, तटरक्षक अकादमी और वायुसेना अकादमी के बराबर का दर्जा दिया जाएगा। ट्रंप ने कहा कि उन्हें अपने पहले कार्यकाल के दौरान श्अंतरिक्ष बलश की स्थापना पर गर्व है। उन्होंने तर्क दिया कि अंतरिक्ष–आधारित खुफिया जानकारी अमेरिकी सैन्य अभियानों के लिए महत्वपूर्ण हो गई है और तकनीक में प्रगति के साथ इसका महत्व और बढ़ेगा। मेनन की पत्नी एना मेनन भी कार्यक्रम में राष्ट्रपति ट्रंप के साथ शामिल हुईं। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, ष्आप लोगों को वहां ऊपर देखकर बहुत अच्छा लगा। हम आप लोगों से बहुत प्यार करते हैं। आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। अनिल मेनन का जन्म और पालन–पोषण मिनियापोलिस में हुआ था। उनके माता–पिता भारत और यूक्रेन से आकर वहां बसे थे। नासा ने उन्हें 2021 की अंतरिक्ष यात्री उम्मीदवारों के वर्ग के लिए चुना था। इससे पहले उन्होंने स्पेसएक्स के पहले फ्लाइट सर्जन और अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन मिशन में सहायता करने वाले नासा क्रू फ्लाइट सर्जन के तौर पर काम किया था।

उन्होंने 14 जुलाई को कॉस्मोनॉट प्योत्र डुब्रोव और एना किकिना के साथ रूस के सोयुज एमएस–29 अंतरिक्ष यान से उड़ान भरी थी। नासा ने बताया कि यह तीन सदस्यीय दल कक्षीय प्रयोगशाला में लगभग आठ महीने बिताएगा और अप्रैल 2027 में पृथ्वी पर लौटने से पहले अनुसंधान और प्रौद्योगिकी से जुड़े काम करेगा।

नेपाल बाढ़ की डरावनी आपबीती: आंखों के सामने बहे घर और अपने, किसी ने पकड़ा तार तो किसी ने जंगल में भाग बचाई जान

एजेंसी/नेपाल में बुधवार को आई तबाही के बाद अब बचे हुए लोग उस खौफनाक मंजर की आपबीती बता रहे हैं। किसी ने अपनी आंखों के सामने पानी और मलबे को घरों की ओर बढ़ते देखा, तो किसी ने भागकर अपनी जान बचाई। हादसे के बाद लोगों के चेहरों पर डर और तबाही की तस्वीर साफ नजर आ रही है। बाढ़ से बचे लोगों ने बेहद डरावने मंजर बयां किए हैं। कोई ऊंची जगहों की ओर बेताब होकर भागना। अपने आस–पास घरों का गिरना और पानी, कीचड़ और मलबे के तेज बहाव में लोगों का बह जाना देखा। कुछ लोगों की जान ऊंची जगहों की ओर तेजी से भागने की वजह से बची। दूसरों ने बेबस होकर अपने दोस्तों और अपनों को बहते हुए देखा, जबकि जो लोग बाद में प्रभावित इलाकों में पहुंचे, उन्होंने बाजारों को कीचड़ में दबा हुआ और परिवारों को अपने लापता रिश्तेदारों की तलाश करते हुए पाया। इस त्रासदी से बचे दीपक तमांग ने बताया कि शुरुआत में उन्होंने लगा कि जमीन हिल रही है। फिर उन्होंने देखा कि पानी कीचड़ और पत्थरों की एक दीवार तिमुरे बाजार में भोटेकोशी नदी के किनारे बने घरों की ओर तेजी से बढ़ रही है। उन्हें एहसास हुआ कि ऊपर जाने के अलावा कोई चारा नहीं है। पड़ोसी सिंधुपलचोक जिले के रहने वाले तमांग, नेपाल–तिब्बत बॉर्डर पर बसे शहर तिमुरे में थे, जब बुधवार को अचानक बाढ़ आ गई। नेपाली न्यूज पोर्टल श्ऑनलाइनखबरश की एक रिपोर्ट के मुताबिक, उन्होंने बताया, श्जब मैं घर से बाहर निकला और पहाड़ी की ओर ऊपर भागा, तो तेज बाढ़ की वजह से कुछ घर पहले ही गिर चुके थे। मेरे पास ज्यादा विकल्प नहीं थे। मेरे पीछे बाढ़ थी और सामने दीवार जैसी पहाड़ी थी। नीचे बाढ़ का पानी तेजी से बढ़ रहा था और लोग अलग–अलग दिशाओं में भाग रहे थे। हर बार जब वह गिरते, तो तमांग को लगता कि शायद यह उनकी जिंदगी का आखिरी पल है। आखिरकार, वह पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गए। वहां से उन्होंने लोगों को बाढ़ में बहते हुए देखा। उनमें उनके दोस्त भी शामिल थे। उन्होंने याद करते हुए कहा, श्जब मेरे दोस्त मेरी आंखों के सामने लहरों में बह गए, तो मैं कुछ नहीं कर सका। आखिरकार तमांग को जंगल में लकड़ी रखने के लिए इस्तेमाल होने वाला एक पुराना गोदाम मिला, जहां अपनी जान बचाने में कामयाब रहे दर्जनों अन्य लोगों ने भी शरण ली थी। बारिश होती रही और वह बिना बिस्तर के वहीं रात बिताते हुए बचाव दल का इंतजार करते रहे। लगभग 24 घंटे बाद उन्हें बचाया गया। बाढ़ के कुछ ही समय बाद त्रिशूली पहुंचे फोटो जर्नलिस्ट अमूल थापा के लिए तबाही का मंजर समझना लगभग नामुमकिन था। नेपाली दैनिक श्नया पत्रिकाश में अपनी यात्रा के बारे में लिखते हुए थापा ने बताया कि उत्तरगया बोर्डिंग स्कूल के कुछ छात्रों के बारे में भी लोगों को बात करते सुना, जो लापता हो गए थे और बाद में छह घंटे तक जंगल से चलकर अपने स्कूल वापस लौटे थे। शुक्रवार दोपहर तक, चितवन इंडस्ट्रियल एसोसिएशन के पास शव ले जाने वाली एम्बुलेंस आ–जा रही थीं। थापा ने लिखा कि बाढ़ में रसुवा से बहकर आए कुछ शव नारायणी नदी से बरामद किए गए थे। इस आपदा में फंसे लोगों में भारतीय–अमेरिकी दंपति अंजना राजा और पट्टाभिरामन् वेंकटेशन भी शामिल थे, जो नेपाल में फंस गए थे और बाद में उन्हें बचाकर एयरलिफ्ट के जरिए काठमांडू ले जाया गया। राजा ने सीबीएस न्यूज को बताया, श्मुझे पता था कि मैं मरने वाली हूं।श वेंकटेशन ने कहा कि मलबे की जो दीवार उनकी तरफ आ रही थी, वह लगभग 60 से 70 फीट ऊंची लग रही थी और सुनामी जैसी दिख रही थी। उन्होंने कहा, यमैं उस भयानक चीज को नीचे आते हुए देख सकता था। उस समय मुझे नहीं पता था कि वह पानी है। सच कहूं तो, मुझे लगा कि वह आग है, जंगल की आग है।श उन्होंने कहा, श्यह कीचड़ मिला हुआ पानी था जो कम से कम 50 से 60 फीट ऊंचा था।श इसकी तुलना एक सांप या कोबरा के फन से की जो उन्हें घूर रहा हो। काठमांडू रिपोर्ट के अनुसार, श्रौतहट की राजदेवी म्युनिसिपैलिटी–2 के हजमिनिया के रहने वाले 36 साल के रामबच्चन साह ने बताया कि वह पुल के पास श्याम स्वीट शॉप में 15 साल से काम कर रहे थे। बुधवार सुबह वे मिठाइयां बना रहे थे, तभी अचानक बाढ़ का पानी दुकान में घुस आया। पानी की तेज धार उन्हें बहा ले गई। तभी उनका हाथ बिजली के एक तार से जा टकराया। उन्होंने कहा, श्मैं तार को पकड़कर बच गया। मुझे नई जिंदगी मिली।श वे लगभग आध घंटे तक तार से लटके रहे, जबकि नीचे बाढ़ का पानी उफान मार रहा था। मैं तो बच गया, लेकिन अपने मामा का पूरा परिवार खो दियाश झापा के सचिन खाती इसलिए बच पाए क्योंकि जब बाढ़ आई, तो वे उस बस्ती से दूर थे। उनके मामा, झापा के बुद्धाशांति–2 के रहने वाले 33 साल के राज कुमार दियाली गहनों का कारोबार कर रहे थे। वे वहां अपनी पत्नी श्रिति और चार साल के बेटे श्रीराज के साथ रहते थे। सचिन भी उनके साथ रह रहे थे और कारोबार में मदद कर रहे थे। बुधवार सुबह, राज कुमार ने सचिन को काम के सिलसिले में चिलीमे भेजा। जब सचिन को बाढ़ के बारे में पता चला, तो वे तुरंत वापस लौटे। जब तक वे पहुंचे, वह बस्ती बह चुकी थी जहां वे रहते थे। राज कुमार की भतीजी राधा खाती ने रोते हुए कहा, श्काश हमें कम से कम उनके शव मिल जाते, भले ही वे जिंदा न मिलें। पूरा परिवार उनका इंतजार कर रहा है।श नेपाल में बाढ़ से बचने वाले राज कुमार कार्की ने बताया कि उन्होंने बाढ़ से आगे ट्रक चलाकर अपनी जान बचाई। उनके पीछे आ रहे करीब नौ कंटेनर ट्रक और ड्राइवर बह गए। पहाड़ी पर ट्रक ले जाने से उनकी जान बची, लेकिन आंखों के सामने तबाही और दोस्तों के बहने का मंजर नहीं भूल पा रहे। नेपाल में बाढ़ से बचे 40 वर्षीय गथे कामी ने बताया कि पहाड़ से पत्थरों के गिरने जैसी आवाज सुनाई दी। तभी भोटेकोशी नदी का पानी तेजी से उनकी ओर बढ़ता दिखा। उन्होंने लोगों को भागने के लिए कहा और जंगल की पहाड़ी पर चढ़ गए। कुछ देर बाद होश आया तो नीचे बस्ती मलबे में दब चुकी थी। कामी बोले, 'आज भी लगता है जैसे सपना था। ऐसा लगता है, मुझे नई जिंदगी मिली है।'

ट्रंप को फिर झटका: डाक से मतदान वाले आदेश पर लगी रोक, प्रशासन ने फैसले के खिलाफ दायर की अपील, जज ने क्या कहा?

वाशिंगटन, एजेंसी।डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन ने उस फैसले के खिलाफ अपील की है, जिसमें एक जज ने राष्ट्रपति के आदेश पर रोक लगा दी थी। इस आदेश में डाक के जरिये मतदान को लेकर कुछ नई शर्तें रखी गई थीं। यह मामला ऐसे समय अदालत पहुंचा है, जब मध्यावधि चुनाव के लिए कुछ राज्यों में 4 सितंबर से मतपत्र भेजे जाने हैं। शुक्रवार को इस फैसले के खिलाफ ट्रंप प्रशासन ने अपील दायर की। इससे पहले बोस्टन की संघीय अदालत के जज ने ट्रंप के कार्यकारी आदेश पर अगले दो हफ्तों के लिए रोक लगा दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने पहले प्रक्रिया से जुड़े आधार पर इस योजना को आगे बढ़ने की अनुमति दी थी। लेकिन अदालत ने अभी यह फैसला नहीं किया है कि यह योजना कानूनी है या नहीं। ट्रंप के आदेश के मुताबिक, अमेरिकी डाक सेवा कुछ राज्यों के मतपत्र पहुंचाने से इनकार कर सकती थी। इसके लिए राज्यों को उन मतदाताओं की सूची देनी होगी, जो वोट देने के योग्य हैं। साथ ही मतपत्र भेजने के लिए एक तय तरह के लिफाफे का इस्तेमाल करना होगा। अमेरिकी जिला अदालत की जज इंदिरा तलवानी ने कहा कि राज्यों के पास नए मतपत्र तैयार करने और छापने के लिए पर्याप्त समय या पैसा नहीं है। उन्हें अपनी व्यवस्था में बदलाव करना होगा। साथ ही अधिकारियों को मतदाताओं की जानकारी डाक सेवा पर डालने के लिए प्रशिक्षण भी देना होगा। व्हाइट हाउस ने इस योजना को श्सामान्य समझ वाले उपायश बताया है।

65 अरब बैरल तेल पर अमेरिका का कब्जा?: ट्रंप का दावा– वेनेजुएला के साथ हुआ अब तक का सबसे बड़ा सौदा

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को कहा कि उनके देश ने वेनेजुएला के साथ एक समझौता किया है। इसके तहत इस दक्षिण अमेरिकी देश के 65 अरब बैरल तेल भंडार पर अमेरिका नियंत्रण हासिल करेगा। ट्रंप ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में इस समझौते की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इसे विदेश मंत्री मार्को रुबियो, रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ और वेनेजुएला की अंतरिम राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज ने बातचीत के बाद तैयार किया है। ट्रंप ने लिखा, अमेरिका ने अभी वेनेजुएला के साथ दुनिया के इतिहास का सबसे बड़ा तेल समझौता किया है। इस समझौते की घोषणा करीब नौ महीने बाद हुई है। इससे पहले ट्रंप के आदेश पर अमेरिकी सेना ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को पकड़ने के लिए एक अभियान चलाया था। उन्हें अमेरिका ले जाया गया था। वहां उन पर संघीय स्तर पर नार्को–आतंकवाद और नशीली दवाओं की तस्करी के आरोपों में मुकदमा चलाया जाना था। ट्रंप पर गैस की बढ़ती कीमतों को लेकर दबाव बढ़ रहा है। वहीं, ईरान में युद्ध को छह महीने पूरे हो चुके हैं। अभी इसके खत्म होने के कोई संकेत नहीं दिख रहे हैं। अमेरिका ने अपने रणनीतिक तेल भंडार का इस्तेमाल भी किया है।

अगस्त की शुरुआत में इसमें तेल की मात्रा 30 करोड़ बैरल से नीचे चली गई थी। 2026 की शुरुआत से इसमें 10 करोड़ बैरल से ज्यादा की कमी आई है। जनवरी में मादुरो को सत्ता से हटाए जाने के बाद के दिनों में ट्रंप ने अमेरिकी तेल कंपनियों के वेनेजुएला लौटने की बात कही थी।

इन कंपनियों को वहां के तेल

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।